A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 09 सितंबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 12, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

पंजाब-बाढ़ ने आप की अंदरूनी कलह को सामने ला दिया?

सत्य ब्यूरो

पंजाब में आई बाढ़ आपदा ने आम आदमी पार्टी की अंदरूनी खींचतान और राजनीतिक मतभेदों को उजागर कर दिया है। जानें कैसे राहत कार्य और प्रबंधन की कमियों ने पार्टी नेतृत्व पर सवाल खड़े किए।

बाढ़ ने पंजाब में आम आदमी पार्टी की अंदरूनी कलह को भी उजागर कर दिया है। पंजाब में सत्ताधारी आम आदमी पार्टी अपने संकट को निपटाने में लगी है। एक नई प्रयोगशाला आम आदमी पार्टी के लिए पंजाब बन गया है। पार्टी के अपने एक अंदरूनी सर्वेक्षण में सामने आया है कि भगवंत मान का ग्राफ भी पंजाब में गिर रहा है और विधानसभा चुनावों से पहले पार्टी की स्थिति बहुत नाजुक हो चुकी है। चर्चाएँ हैं कि लोगों में मुख्यमंत्री भगवंत मान से उमीदें टूट चुकी हैं कि वो मजबूती से कुछ निर्णय कर पाएंगे।

%दिल्ली लॉबी% कथित तौर पर प्रशासन में हस्तक्षेप कर रही है और अपना नियंत्रण बनाये हुए है, उसकी चर्चाएँ पूरे पंजाब में आम तौर पर लोगों में होने लगी है। मुख्यमंत्री भगवंत मान का अरविंद केजरीवल के साथ बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के दौरे पर न जाने और अचानक उनकी तबियत ख़राब होने के चलते अस्पताल में भर्ती होने से अलग-अलग कयास लगाए जा रहे हैं। सियासी हलकों में कुछ घटनाओं को संकेतों के तौर पर भी परखा जाता है। निरंतर पंजाब में सक्रिय रहने वाले अरविन्द केजरीवाल ने बाढ़ के हालात में कई दिनों बाद पंजाब की सुध ली है। सबसे पहले बाढ़ की चपेट में आये जिला गुरदासपुर अमृतसर की बजाये केजरीवाल और मनीष सिसोदिया ने पंजाब के सुल्तानपुर लोधी में बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा उस दिन किया जब उनकी दिल्ली की अदलात में शराब घोटाले के ममले में पेशी थी। मुख्यमंत्री भगवंत मान चाहते थे कि पहले अमृतसर, गुरदासपुर, अजनाला, बटाला का दौरा किया जाये। कयास लगाया जाने लगा है कि अरविन्द केजरीवाल के पंजाब पर नियंत्रण की कोशिश में भगवंत मान को राज्यसभा जाने को कहा गया है।

2027 के विधानसभा चुनावों में पार्टी की फिर से जीत की संभावनाओं को बरकरार रखने के लिए केजरीवाल प्रदेश में नेतृत्व में परिवर्तन करने के तौर पर अमृतसर साउथ से विधायक और कैबिनेट मंत्री नए सिख चेहरे इंदरबीर सिंह निज्जर को आगे बढ़ाना चाहते हैं, जिन्हें प्रोटेम स्पीकर भी नियुक्त किया गया था। साथ में उप-मुख्यमंत्री के तौर पर हिन्दू चेहरा अमन अरोड़ा और पंजाब में एक बड़े वर्ग अनुसूचित जाति को साधने के लिए वर्तमान वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा को लाना चाहते हैं। भगवंत मान इस पर आपत्ति को अपनी सियासी मजबूरी की वजह से व्यक्त करने में असमर्थ हैं। पिछले साल 2024 में भगवंत मान को पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष पद से हटा कर हिन्दू चेहरा अमन अरोड़ा को नया प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया था। केजरीवाल प्रदेश में मतदाताओं के नए राजनीतिक समीकरण गढ़ने की रणनीति पर चलते हुए साफ़ दिखयी देते हैं।

पटियाला जिले के सनौर विधानसभा के विधायक हरमीत सिंह पठनमाजरा ने जिस तरह बाढ़ के लिए प्रदेश सरकार पर सवाल उठाये और कथित %दिल्लीवालों% की लूट को अब्दाली की लूट से बड़ा बताया उससे भी पंजाब की सियासत में बड़ी हलचल हो गयी है। इस घटना ने भगवंत मान और अरविन्द केजरीवाल के बीच की खाई को और बढ़ा दिया है। हरमीत सिंह पठनमाजरा ने मुख्यमंत्री भगवंत मान को दिल्ली के बजाय पंजाब के हितों के लिए खड़ा होने और अन्य विधायकों को भी साथ लेने की बात की।

पंजाब में जिस तरह %दिल्ली% के नियंत्रण का ढाँचा बनाया गया है उससे पंजाब के बहुत से विधयक असंतुष्ट हैं। कई विधायकों के आगामी चुनावों में टिकट कटने की आशंकाओं के चलते भी एक अनिश्चितता का वातावरण व्याप्त है।

1988 में पंजाब में अभूतपूर्व बाढ़ की स्थितियाँ बनी थीं जिसके बाद प्रदेश में सरकार के प्रति एक बड़ा आक्रोश प्रदेश में उभरा था। वर्तमान में पंजाब की सीमा से लगते हुए 8 जिलों को बाढ़ ने अपनी चपेट में लिया है। पठानकोट, गुरदासपुर, अमृतसर, होशियारपुर, कपूरथला, तरनतारण, फिरोजपुर, फाजिल्का के खेतों में खड़ी धान की फसल लगभग डूब गई है। सबसे बड़ी कठिनाई मवेशियों पर बन आई है। पंजाब के किसानों की आर्थिकी की रीढ़ बेजुबान जानवरों के बचाव के लिए और उनके चारे और बीमारियों से बचाव की व्यवस्था के कितने पुख्ता प्रबंध किये गए हैं, ये साफ़ नहीं। बाढ़ के बाद पुनर्वास और जनजीवन में होनेवाली कठिनाइयों की चुनौती पंजाब सरकार के लिए बड़ी हो गई है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा है कि स्थितियाँ काफी विकट हैं और सरकार की ओर से हर संभव प्रयास लोगों और मवेशियों की रक्षा के लिए किये जा रहे हैं। अब सवाल यह भी उठने लगे हैं कि प्रदेश के प्रशासनिक तंत्र ने मानसून में होने वाली परिस्थितियों का आकलन समय रहते क्यों नहीं किया? पंजाब की भौगोलिक स्थिति और उसमें से गुजरने वाली नदियों की क्षमता तथा अलग-अलग बांधों का प्रबंधन और आपदा में संचालन पहले से ही तय मानकों के अनुसार किया जाता रहा है। मुख्यमंत्री भगवांत मान और पंजाब सरकार का पूरा तंत्र किस मुगालते में ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से रोकने में विफल रहा, यह भी हैरान करने वाला है। मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकर से गुहार लगाई है कि राज्य को विशेष सहायता दी जानी चाहिए ताकि लोगों को हुए नुक़सान का उचित मुआवजा समय पर दिया जा सके। लेकिन आम आदमी पार्टी और बीजेपी के बीच टकराव की स्थितियों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

अब सवाल पंजाब में सियासी संघर्ष के परिणमों पर टिक गया है। केंद्र की बीजेपी सरकार और नेतृत्व पंजाब में नयी संभावनाओं पर नजर बनाये हुए है। राजनीति में समझौते और संधियां समय अनुसार आकार भी लेती हैं। केजरीवल परिवर्तन को प्रेरणा मानते रहे हैं। पिछले वर्ष पंजाब के होशियारपुर में अपनी विपश्यना करने के बाद अरविन्द केजरीवाल सीधे अमृतसर पहुंचे थे और अपने ठहरने के लिए इंदरबीर सिंह के घर को ही चुना था।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

आधार पहचान का प्रमाण है, नागरिकता का नहीं

● एससी ने चुनाव आयोग से कहा-इसे 12वां दस्तावेज माना जाए

पटना (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में सोमवार को बिहार में एसआईआर (वोटर वेरिफिकेशन) के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने चुनाव आयोग को आदेश दिया कि वोटर की पहचान के लिए आधार को 12वें दस्तावेज के तौर पर माना जाए। बिहार एसआईआर के लिए फिलहाल 11 निर्धारित दस्तावेज हैं जिन्हें मतदाताओं को अपने फॉर्म के साथ जमा करना होता है। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने स्पष्ट किया कि आधार नागरिकता का प्रमाण नहीं होगा। कोर्ट ने ये भी कहा कि आधार कार्ड को लेकर अगर किसी तरह की शंका हो तो आयोग इसकी जांच कराए। कोई भी नहीं चाहता कि चुनाव आयोग अवैध प्रवासियों को मतदाता सूची में शामिल करे। केवल वास्तविक नागरिकों को ही वोट देने की अनुमति होगी और जो लोग फर्जी दस्तावेजों के आधार पर दावा कर रहे हैं, उन्हें मतदाता सूची से बाहर रखा जाएगा। कोर्ट ने चुनाव आयोग से कहा कि वह पहचान के प्रमाण के लिए आधार को दस्तावेज के रूप में स्वीकार करने के लिए आवश्यक निर्देश जारी करे। कोर्ट ने साफ किया कि आधार नागरिकता का प्रमाण नहीं है।

यूपी के हर विवि कॉलेज की होगी जांच

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से सभी यूनिवर्सिटीज और कॉलेज की जांच को लेकर आदेश दिए गए हैं। एजेंसी के अनुसार वरिष्ठ पुलिस, प्रशासनिक और शिक्षा अधिकारियों की खास टीमें बनाने के निर्देश दिए गए हैं। यह टीमें कॉलेजों की मान्यता और एडमिशन को लेकर जांच करेंगी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि स्वीकृत पाठ्यक्रम ही यूनिवर्सिटी-कॉलेज में चल रहे हैं और छात्रों के साथ कोई धोखाधड़ी नहीं हो रही है। सीएम योगी के आदेश अनुसार अगर अगर कोई बिना मान्यता वाला प्रोग्राम चल रहा होगा तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी और उन्हें स्टूडेंट्स की फीस को भी वापस करना होगा। हाल ही में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सदस्यों और राज्य पुलिस के बीच बाराबंकी के एक विश्वविद्यालय में कानून के एक कोर्स में कथित अनियमितताओं को लेकर झड़प हो गई थी। इसके बाद एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की थी।

जम्मू के कुलगाम में सेना की आतंकियों से मुठभेड़

● 2 आतंकी मारे गए, एक आतंकी पहलगाम हमले के बाद जारी लिस्ट में था

कुलगाम (एजेंसी)। सेना ने कश्मीर के कुलगाम में मुठभेड़ के दौरान 2 आतंकियों को मार गिराया है। सोमवार सुबह गुड्डर के जंगलों में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई। सेना ने इसे ऑपरेशन गुड्डर नाम दिया है। इस दौरान एक एससीओ समेत 2 जवान घायल हुए हैं। मारे गए एक आतंकी की पहचान शोपियां के रहने वाले आमिर अहमद डार के रूप में हुई है। वह लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा था और सितंबर 2023 से एक्टिव था। पहलगाम हमले के बाद सुरक्षा एजेंसियों की तरफ से जारी 14 आतंकवादियों की लिस्ट में यह भी शामिल था। पुलिस, सेना की एक जॉइंट टीम ने आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके में सर्चिंग शुरू की थी। जानकारी के मुताबिक जंगल में लश्कर के 3 से ज्यादा आतंकी छिपे हैं। दोनों ओर से गोलीबारी जारी है और अतिरिक्त सुरक्षा बल इलाके में भेजे गए हैं। खबर मिलने के बाद टीम ऐक्टिव हो गई थी।

सुप्रभात

मोहब्बतों में दिखावे की
झदोस्ती न मिला
अगर गले नहीं मिलता
तो हाथ भी न मिला
घरों पे नाम थे नामों के
साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया
कोई आदमी न मिला
तमाम रिश्तों को मैं
घर पे छोड़ आया था
फिर उस के बा%द मुझे
कोई अजनबी न मिला
ख़ुदा की इतनी बड़ी
काएनात में मैं ने
बस एक शख़्स को माँगा
मुझे वही न मिला
बहुत अजीब है ये
क़ुर्बतों की दूरी भी
वो मेरे साथ रहा और
मुझे कभी न मिला

– बशीर बद्र

कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में हुआ बरकतउल्ला विश्वविद्यालय दीक्षांत समारोह

विश्वविद्यालयों में कृषि संकाय, फैशन डिजाइनिंग जैसे रोजगारपरक कोर्स संचालन के लिए हो रही है विशेष पहल: सीएम यादव

विद्यार्थी अपने माता-पिता और गुरूजनों के योगदान के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहें : राज्यपाल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि विद्यार्थी अपने माता-पिता और गुरूजनों के योगदान के प्रति हमेशा कृतज्ञ रहें। सफलता के बाद भी उनका हमेशा सम्मान करें। दीक्षांत शपथ का प्रतिदिन मनन करें और जीवन भर उसका अनुसरण भी करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नए, डिजिटल और विकसित भारत के सपने को साकार करने में विश्वविद्यालयों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। दीक्षांत, वह अवसर है जब शैक्षणिक यात्रा की पूर्णता के साथ, समाज और राष्ट्र की सेवा यात्रा का शुभारंभ होता है। यह केवल डिग्री प्राप्त करने का उत्सव नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के वर्षों की मेहनत, अनुशासन और गुरुजनों के सफल मार्गदर्शन का प्रतिफल है। राज्यपाल श्री पटेल सोमवार को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्ज्वलन और मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण कर समारोह का शुभारंभ किया। विश्वविद्यालयीन स्मारिका और पुस्तक का लोकार्पण भी किया। राज्यपाल व कुलाधिपति श्री पटेल तथा मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अगुवाई में बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की शोभा यात्रा ने मंत्रोच्चार के बीच सभागार में प्रवेश किया। राज्यपाल श्री पटेल का विश्वविद्यालय के कुलगुरु श्री सुरेश कुमार जैन ने पौधा, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया।

डिग्री और स्वर्ण पदक प्राप्त कर खिले विद्यार्थियों के चेहरे

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से युवाओं के लिए उनके कौशल, रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर अनेक अवसर विद्यमान है। आज देश में कृषि, खाद्य, फिजिकल एजुकेशन, साइबर सिक्योरिटी, फोरेंसिक साइंस, ड्रोन तकनीक और विधि आदि विषयों में कैरियर की संभावनाएं तेजी से बढ़ी है। राज्यपाल श्री पटेल ने युवाओं से अपने ज्ञान और कौशल से समाज और राष्ट्र उत्थान के लिए आगे आने का आह्वान किया है। राज्यपाल श्री पटेल ने समारोह में विद्यार्थियों को डिग्री और स्वर्ण पदक प्रदान किए।

नए मेडिकल कॉलेज और अस्पतालों में विश्वविद्यालयों की बड़ी भूमिका

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के माध्यम से आज 54 हजार से अधिक विद्यार्थियों को स्नातक, 23 हजार विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर, 190 विद्यार्थियों को पीएचडी, 21 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल, इस प्रकार कुल 78 हजार विद्यार्थियों के सपने साकार हो रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को बधाई दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में प्राइवेट कॉलेज और शासकीय विश्वविद्यालयों को मेडिकल कॉलेज और अस्पताल खोलने के लिए सरकार पूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है। देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय इंदौर के सहयोग से जनजातीय बहुल झाबुआ जिले में मेडिकल कॉलेज खुलने जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में सुशासन की नई बयार आई है। देश के युवा, किसान, गरीब सभी वर्गों के कल्याण के साथ सरकार आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी देश के स्वाभिमान और समाज के सभी वर्गों के हितरक्षक हैं। 21वीं सदी भारत की होगी और भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा।

दुनिया का इकलौता मंदिर जहां जिंदा लोग खुद करते हैं अपना श्राद्ध

● अनोखा है मंदिर, अनोखी है वजह, इस मंदिर का नाम जनार्दन गया है

गया (एजेंसी)। पितृपक्ष की शुरुआत हो चुकी है, पितृपक्ष में हिंदू धर्म से जुड़े लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध करते हैं। पितृपक्ष हर साल भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक चलता है, इस खास काल में पूर्वजों के श्राद्ध और पिंडदान का विशेष महत्व है। माना जाता है, इस समय किया गया श्राद्ध पितरों की आत्मा को शांति और मोक्ष प्रदान प्रदान करता है। आमतौर पर ये कर्म मृतकों के लिए होता है, लेकिन क्या आपने सुना है कोई व्यक्ति जीवित रहकर अपना श्राद्ध करें। बिहार में एक ऐसा ही अद्भुत मंदिर है, जहां आत्मश्राद्ध यानी जीते जी खुद का पिंडदान करते हैं। माना जाता है गया जी में पिंडदान करने के बाद पितृऋण से मुक्ति मिलती है, भगवान श्रीराम, लक्ष्मण और माता सीता ने भी त्रेता युग में यहां की फल्गु नदी के किनारे राजा दशरथ की आत्मा की शांति के लिए श्राद्ध और पिंडदान किया था, यही कारण है आज भी गया जी को पितृश्राद्ध का सबसे बड़ा तीर्थस्थल मानते हैं। गया जी में करीबन 54 पिंडदेवी और 53 पवित्र स्थल होते हैं, जैसे पितरों का पिंडदान होता है, लेकिन जनार्दन मंदिर वेदी पूरी दुनिया में इकलौता ऐसा मंदिर है, जहां जीवित व्यक्ति अपना ही श्राद्ध करते हैं। ये मंदिर भस्मकूट पर्वत पर मां मंगला गौरी मंदिर के उत्तर में मौजूद है। माना जाता है यहां भगवान विष्णु खुद जनार्दन स्वामी के रूप में पिंड ग्रहण करते हैं। आमतौर पर यहां वे लोग आत्मश्राद्ध करने के लिए आते हैं, जिन लोगों की संतान नहीं है या परिवार में उनके बाद पिंडदान करने वाला कोई नहीं है या फिर संत-वैराग्य भाव से घर-परिवार से दूर हो गए हैं वे लोग अपना पिंडदान करने के लिए यहां आते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 09 सितंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

ट्रंप टैरिफ का तोड़ निकालने भारत-ईयू आए साथ!

● एफटीए समेत कई मुद्दों पर बन गया है खास प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की बातचीत अब रफ्तार पकड़ रही है। नई दिल्ली में 8 सितंबर से शुरू होने वाली 13वीं दौर की वार्ता में दोनों पक्ष गंभीर मसलों पर ध्यान देंगे। गैर-टैरिफ रुकावटें, बाजार में पहुंच, और सरकारी खरीद जैसे मुद्दे इस बार चर्चा का केंद्र होंगे। दोनों पक्षों का मकसद इस साल के अंत तक इस समझौते को अंतिम रूप देना है, ताकि वैश्विक व्यापार में नई मिसाल कायम हो सके। यह समझौता न सिर्फ व्यापार को बढ़ावा देगा, बल्कि दोनों के बीच रणनीतिक रिश्तों को भी मजबूत करेगा। इसके साथ ही, भारत और ईयू 2026 की पहली तिमाही में होने वाले भारत-ईयू शिखर सम्मेलन की तैयारियों में जुटे हैं।

इस सम्मेलन में कई अहम फैसले और घोषणाएं होने की उम्मीद है। दोनों पक्षों के बीच नई दिल्ली और ब्रसेल्स में कई मुलाकातें तय हैं, जो इस समझौते को और मजबूती देंगी। खास तौर पर अमेरिका की टैरिफ नीतियों से पैदा हुई उथल-पुथल ने इस समझौते को और अहम बना दिया है। 13वीं और 14वीं दौर की बातचीत में तकनीकी रुकावटें, सैनिटरी और फाइटोसैनिटरी मसले, बाजार में पहुंच, मूल नियम, और सरकारी खरीद जैसे अहम मुद्दों पर जोर होगा। अब तक 23 में से 11 अध्यायों पर सहमति बन चुकी है, जिनमें बौद्धिक संपदा, सीमा शुल्क, डिजिटल व्यापार, और धोखाधड़ी-रोधी उपाय शामिल हैं। पूंजी आवाजाही पर एक और अध्याय जल्द पूरा होने वाला है। दोनों पक्ष जुलाई में आदान-प्रदान किए गए सेवाओं और निवेश के प्रस्तावों पर भी काम कर रहे हैं, ताकि सही संतुलन बनाया जा सके। भारत ने चावल, चीनी, और डेयरी जैसे संवेदनशील उत्पादों को समझौते से बाहर रखा है, जबकि ईयू ऑटोमोबाइल और स्पिरिट्स के लिए बाज़ार में पहुंच चाहता है। इसके अलावा, अमेरिका की ओर से झींगा जैसे समुद्री उत्पादों पर टैरिफ दोगुना करने के बाद, ईयू भारत के एक्वाकल्चर निर्यात को बढ़ावा देने पर विचार कर रहा है। पिछले साल भारत ने अमेरिका को 2.8 अरब डॉलर के झींगे निर्यात किए थे। भारत और ईयू के बीच सिर्फ व्यापार ही नहीं, बल्कि रणनीतिक सहयोग भी गहरा हो रहा है। 17 सितंबर को ईयू की विदेश और सुरक्षा नीति प्रमुख काजा कैलास भारत के साथ बात करेंगी।

अब सीमा के इस पार, परिंदा भी नहीं मार सकेगा पर

● सीमा पर एंटी ड्रोन एडवांस रडार सिस्टम लगाएगी सेना ● ड्रोन हमलों की तैयारी, 100 टारगेट होंगे एक साथ ट्रैक

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान ने रात के अंधेरे में भारत पर कई ड्रोन हमले किए थे। इनमें से ज्यादातर ड्रोनों को सेना ने हवा में ही मार गिराया था, लेकिन कुछ ड्रोन सीमा पार कर रिहायशी इलाकों तक पहुंचने में कामयाब रहे थे।

अब सेना ने हर तरह से दुश्मन को नेस्तनाबूद करने का फैसला किया है। भारतीय सेना उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर एडवांस रडार सिस्टम स्थापित करने की तैयारी में है। इस रडार का सर्विलांस नेटवर्क बेहद मजबूत होगा, जो मुश्किल से मुश्किल हवाई हमलों को भी ढूंढ़ कर ट्रैक करेगा और फिर उन्हें हवा में ही मार गिराएगा। नए रडार सिस्टम को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह रडार क्रॉस सेक्शन की मदद से टारगेट को ढूंढ़ने से लेकर ट्रैक करने और उसे खत्म करने का काम करेगा। इस एडवांस रडार सिस्टम को सेना के अकाशतीर एअर डिफेंस नेटवर्क से जोड़ा जाएगा।

'सुप्रीम' राय, नेता को मोटी चमड़ी वाला होना चाहिए

● तेलंगाना सीएम रेवंत रेड्डी के खिलाफ याचिका खारिज ● कहा था-भाजपा 400 सीट जीती तो आरक्षण खत्म होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा- नेताओं को मोटी चमड़ी का होना चाहिए। राजनीतिक लड़ाइयों के लिए सुप्रीम कोर्ट का उपयोग नहीं करना चाहिए। कोर्ट ने ये टिप्पणी भाजपा नेता द्वारा तेलंगाना के सीएम रेवंत रेड्डी के खिलाफ लगाई गई याचिका की सुनवाई के दौरान कही। 2024 लोकसभा चुनाव के प्रचार के दौरान सीएम रेड्डी ने कहा था- अगर बीजेपी 400 सीट जीती तो आरक्षण समाप्त कर देगी। भाजपा नेता का

दावा किया था कि इससे पार्टी को नुकसान हुआ और उसने रेड्डी के खिलाफ मानहानि की याचिका दायर की गई थी। तेलंगाना हाईकोर्ट ने याचिका को खारिज कर दिया था, जिसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई बीआर गवई और न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन, अतुल एस चंदुरकर की पीठ ने भी याचिका खारिज कर दी। हैदराबाद ट्रायल कोर्ट ने पिछले साल अगस्त में कहा था कि रेड्डी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता के तहत मानहानि के अपराध और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 125 के तहत केस बनता है। अधिनियम की धारा 125 दुश्मनी को बढ़ावा देने से संबंधित थी।

भारत बनाएगा दुश्मन के घर में घुसकर मारने वाली फोर्स

● जॉइंट वॉर थ्योरी का ब्लूप्रिंट तैयार, अमेरिका-रूस-इजराइल जैसी होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सैन्य बलों की एलीट कमांडो फोर्स का संयुक्त युद्ध सिद्धांत बनाया गया है। यह साझा दस्तावेज सेना की स्पेशल फोर्स, वायु सेना की गरुड़ कमांडो फोर्स और नौसेना के मार्कोस कमांडो के लिए बनाया गया है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद हुई इस कवायद में तीनों सेनाओं की एलीट फोर्स की तैयारी का हर पहलू स्पष्ट किया गया है। मसलन, अगर किसी देश या उसकी शह में पलने वाले आतंकी, भारत विरोधी कार्रवाई करते हैं तो उनके खिलाफ क्या होगा। यही नहीं, युद्ध होने पर ये कमांडो क्या करेंगे और शांतिकाल में भूमिका क्या होगी, यह भी स्पष्ट किया गया है। इसका

मकसद, दुश्मन के सामरिक महत्व के टारगेट्स को भीतर घुसकर वार करने की क्षमता विकसित करना है। साथ ही, दुश्मन के उन कीमती ठिकानों पर हमला बोलने की रणनीति बनी है, जिससे उसकी अर्थव्यवस्था चरमरा जाए और उसका युद्ध छेड़ने का हौंसला भी टूट जाए। अमेरिका की डेल्टा फोर्स और नेवी सील्स, स्पेत्सनाज और इजराइल की सयेरेत मतकाल दुनिया की सबसे खतरनाक स्पेशल फोर्सेज हैं।

इनके ऑपरेशन दुश्मन के घर में घुसकर सटीक वार के लिए मशहूर हैं। डेल्टा फोर्स- यह अमेरिका की आर्मी स्पेशल ऑपरेशन्स यूनिट है। 1977 में बनी। मुख्य काम- आतंकवाद-रोधी, होस्टेज रेस्क्यू, कवर्ट ऑपरेशन, हाई-वैल्यू टारगेट्स को पकड़ना/मारना। सदस्य ज्यादातर अमेरिका के हैं।

कर्नाटक के मांड्या में गणपति विसर्जन के दौरान भारी बवाल

● शोभा यात्रा में खूब चले पत्थर, 8 घायल, 21 गिरफ्तार

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मांड्या में गणपति विसर्जन के दौरान भारी बवाल की खबर है। गणपति विसर्जन के लिए निकाली जा रही शोभायात्रा में दो समुदाय के लोग मामूली सी बात हुए विवाद के बाद आपस में भिड़ गए। इसके बाद शोभायात्रा पर कथित तौर पर मस्जिद से पथराव किए जाने के आरोप हैं। इस पथराव में आठ लोग बुरी तरह घायल हो गए हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हिंसा की इस घटना के बाद इलाके में भारी तनाव है, जिसे देखते हुए प्रशासन ने धारा 144 लागू कर दिया है। पत्थरबाजी के आरोप में पुलिस ने 21 लोगों को

गिरफ्तार भी किया है। हालात से निपटने के लिए पुलिस ने वहां अतिरिक्त बलों की भी तैनाती की है।

नेपाल में 18 मौतों के बाद सोशल मीडिया फिर शुरू

● बैन-भ्रष्टाचार के खिलाफ युवा सुबह संसद में घुसे थे ● झुक गए पीएम ओली, सेना की फायरिंग में 200 घायल

काठमांडू (एजेंसी)। नेपाल में सुबह से जारी विरोध प्रदर्शन के बाद सोशल मीडिया फिर से शुरू कर दिया गया। इस प्रदर्शन में अब तक 18 लोगों की मौत हुई, जबकि 200 से ज्यादा घायल हो गए। इस प्रदर्शन की अगुआई जेन-जेड यानी 18 से 30 साल के युवाओं ने की। यह प्रदर्शन अभी भी जारी है। सोशल मीडिया पर बैन और सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ सोमवार सुबह 12 हजार से ज्यादा प्रदर्शनकारी युवा संसद भवन परिसर में घुस गए, जिसके बाद सेना ने कई राउंड फायरिंग की। नेपाल के इतिहास में संसद में घुसपैठ का यह पहला मामला है। रिपोर्ट के मुताबिक,

प्रदर्शनकारियों ने संसद के गेट नंबर 1 और 2 पर कब्जा कर लिया था। इसके बाद संसद भवन, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, पीएम आवास के पास के इलाकों में कर्फ्यू लगा दिया गया। काठमांडू प्रशासन ने तोड़फोड़ करने वालों को देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिए हैं। नेपाल सरकार ने 3 सितंबर को फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब समेत 26 सोशल मीडिया साइट्स पर बैन लगाने का फैसला किया था। इन प्लेटफॉर्म ने नेपाल के संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में रजिस्ट्रेशन नहीं कराया था। इसके लिए मंत्रालय ने 28 अगस्त को आदेश जारी कर 7 दिन का समय दिया था, यह समय सीमा 2 सितंबर को खत्म हो गई। नेपाल में जारी विरोध प्रदर्शनों में अब तक मरने वालों की संख्या 18 पहुंच गई है। जबकि 200 से ज्यादा घायल हैं। कई जगह पर प्रदर्शनकारियों ने पथराव किया है।

महिला से शादी का झांसा देकर रेप

परिचित ने पति की मौत के बाद बढ़ाई नजदीकी, घुमाने के बहाने ले गया होटल

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक महिला से शादी का झांसा देकर रेप का मामला सामने आया है। शाहजहांनाबाद क्षेत्र में रहने वाली महिला के पति का 2 साल पहले निधन हो गया था। इसके बाद एक पूर्व परिचित ने मदद के बहाने नजदीकी बढ़ाई। अप्रैल 2025 में उसने मिलने के बहाने बुलाया। वह पीड़िता को लालघाटी के एक होटल रूम में ले गया। वहां उसके साथ जबरन रेप किया। विरोध करने पर जल्द शादी करने का वादा कर दिया। पिछले 2 महीनों से आरोपी उसे नजरअंदाज करने लगा। पीड़िता ने शादी के लिए जोर दिया तो उससे हर तरह का संपर्क खत्म कर दिया। तब महिला ने एफआईआर दर्ज कराई। कोहेफिजा पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

पति की मौत के बाद हुई थी आरोपी से मुलाकात

पुलिस के मुताबिक 30 वर्षीय पीड़िता के पति की मौत 2023 में हो गई थी। पति की मौत के बाद पीड़िता आरिफ नगर स्थित ससुराल को छोड़कर अपने दोनों बच्चों के साथ शाहजहांनाबाद इलाके के एक फ्लैट में रहने लगी। वह गृहिणी है। घर खर्च में सहयोग मायके पक्ष के लोग करते हैं। 2023 में ही पीड़िता की मुलाकात पूर्व परिचित दानिश उसमानी से हुई। दोनों के बीच दोस्ती के बाद प्रेम प्रसंग हो गया।

बच्चों के साथ अपनाने का भरोसा दिलाया था

पीड़िता ने आरोपी दानिश उसमानी से साफ कह दिया था कि शादी के बाद दोनों बच्चों को साथ रखेगी। उसने भी इस बात को मान लिया। बाद में दोनों मिलने जुलने लगे। इसी साल अप्रैल महीने में आरोपी ने पीड़िता को घुमाने के बहाने बुलाया और होटल में उसके साथ ज्यादती की। पीड़िता ने वरिष्ठ अधिकारी को शिकायती आवेदन दिया था, आवेदन की जांच के बाद रविवार की रात को एफआईआर दर्ज कर ली गई।

रजनीकांत के साथ 46 साल बाद काम करेंगे कमल हासन

● एक्टर ने किया कंफर्म, बोले-यह रीयूनियन पहले ही हो जाना चाहिए था

चेन्नई (एजेंसी)। साउथ के सुपरस्टार कमल हासन और रजनीकांत 46 साल बाद एक बार फिर बड़े पर्दे पर साथ नजर आएंगे। दुबई में आयोजित नेक्सा सिमा अवॉर्ड्स 2025 के दौरान कमल हासन ने इस बात की घोषणा की। उन्होंने कहा कि यह रियूनाइट तो पहले ही हो जाना चाहिए था। कमल

हासन ने कहा, हम बहुत पहले एक हो गए थे, लेकिन अलग रहना इसलिए चुना, क्योंकि वे एक बिस्किट बांटकर हमें आधा-आधा देते थे। हम दोनों को एक-एक पूरा बिस्किट चाहिए था और हमें वो मिल गया और हमने इसे इंजॉय किया।

उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए वोटिंग आज

● एनडीए कैंडीडेट के लिए राह हो गई और आसान

बीजेडी ने किया किनारा, गठबंधन भी हुआ मजबूत

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश का अगला उपराष्ट्रपति कौन होगा, ये कल 9 सितंबर यानी मंगलवार को वोटिंग के बाद स्पष्ट हो जाएगा। उपराष्ट्रपति चुनाव से ठीक पहले सियासी गहमागहमी तेज है। इस बीच नवीन पटनायक की पार्टी बीजू जनता दल ने वोटिंग से एक दिन पहले अपने पत्ते खोल दिए। बीजेडी का कहना है कि वो उपराष्ट्रपति चुनाव में शामिल नहीं होगी। पार्टी ने स्पष्ट किया है कि न तो वो केंद्र की सत्ताधारी एनडीए के उम्मीदवार को सपोर्ट करेंगे और न ही विपक्षी इंडिया गठबंधन के कैंडीडेट को। बीजेडी के इस दांव से एनडीए कैंडीडेट की राह और आसान हो गई। नंबर गेम में सत्ताधारी गठबंधन के उम्मीदवार आगे माने जा रहे हैं। बीजेडी सांसद सस्मित पात्रा ने कहा कि बीजू जनता दल ने मंगलवार को होने वाले उपराष्ट्रपति चुनाव से दूर रहने का फैसला किया है। बीजू जनता दल, एनडीए और इंडिया दोनों ही गठबंधनों से समान दूरी बनाए रखेगा।

हमारा ध्यान ओडिशा पर है। हम ओडिशा के साढ़े चार करोड़ लोगों के विकास और कल्याण पर अपना फोकस रखना चाहते हैं।

कर्नाटक के मांड्या में गणेश विसर्जन में पथराव

● 8 लोग घायल, 20 आरोपी गिरफ्तार, लगा कर्फ्यू

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक के मांड्या में गणेश प्रतिमा विसर्जन जुलूस के दौरान झड़पों में 8 लोग घायल हो गए हैं। पुलिस ने हिंसा में शामिल 20 हिरासत में लिया है। शांति कायम कारने के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया है। मांड्या पुलिस के अनुसार, यह विवाद उस वक्त पर हुआ जब मांड्या के सिद्धार्थ नगर 5वें क्रॉस से जुलूस निकल रहा था। तब लोगों ने उस पर पथराव किया, जिसके बाद दूसरे समूह ने भी जवाबी कार्रवाई की। पुलिस के अनुसार मांड्या की यह घटना रविवार रात की है। गणेश प्रतिमा विसर्जन जुलूस के दौरान दो समूहों द्वारा कथित तौर पर पथराव किए किया गया। कर्नाटक के गृह मंत्री जी परमेश्वर ने कहा है कि स्थिति नियंत्रण में है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि इसके तुरंत बाद इलाके में कर्फ्यू लगा दिया गया और कहा कि

स्थिति अब नियंत्रण में है। घायलों का फिलहाल कस्बे के एक अस्पताल में इलाज चल रहा है। अधिकारियों ने बताया कि एहतियात के तौर पर पूरे कस्बे में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है। पुलिस के अनुसार, यह घटना रात करीब 8 बजे राम रहीम नगर की एक मस्जिद के पास उस समय हुई जब सिद्धार्थ नगर 5वें क्रॉस से जुलूस निकल रहा था। अधिकारियों ने बताया कि लोगों ने कथित तौर पर जुलूस पर पथराव किया, जिसके जवाब में दूसरे समूह ने मस्जिद को निशाना बनाया और फिर दोनों समुदायों के बीच झड़प हो गई।

बिहार चुनाव से पहले नीतिश का बड़ा दांव

आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका को दिया दीवाली वाला गिफ्ट

पटना (एजेंसी)। बिहार में इस साल विधानसभा चुनाव होना है। चुनाव से पहले नीतिश सरकार ने राज्य के आंगनबाड़ी सेविका और सहायिकाओं को 'दीवाली वाला गिफ्ट' दे दिया है। नीतिश सरकार ने बिहार की आंगनबाड़ी सेविका और सहायिकाओं का मानदेय बढ़ाने का निर्णय लिया है। बिहार में पहले आंगनबाड़ी सेविका का मानदेय 7,000 रुपये और आंगनबाड़ी सहायिका का मानदेय 4,000 रुपये था। माना जा रहा है कि नीतिश कुमार ने आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका के मानदेव में बढ़ोतरी कर उन्हें खुश करने का काम किया है। नीतिश सरकार के मानदेय में बढ़ोतरी के बाद अब आंगनबाड़ी सेविका का मानदेय 7,000 रुपये से बढ़ाकर 9,000 रुपये और आंगनबाड़ी सहायिका का मानदेय 4,000 रुपये से बढ़ाकर 4,500 रुपये कर दिया गया है। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने कहा कि राज्य में बच्चों और गर्भवती महिलाओं के पोषण व जीवन स्तर सुधार में आंगनबाड़ी सेविकाओं एवं सहायिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनके योगदान का सम्मान करते हुए मानदेय में वृद्धि का निर्णय लिया गया है।

आर्थर रोड जेल, बैरक नंबर...

फ्रॉड मेहुल चोकसी के प्रत्यर्पण की तैयारी तेज!

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के लिए मेहुल चोकसी का प्रत्यर्पण अब चर्चा का बड़ा विषय बन चुका है। 66 साल के इस कारोबारी पर पंजाब नेशनल बैंक में 12,000 करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप है। बेल्जियम के एंटवर्प में उनकी गिरफ्तारी के बाद भारत ने प्रत्यर्पण के लिए जोरदार कोशिशें शुरू की हैं। भारत

ने बेल्जियम को भरोसा दिलाया है कि चोकसी को मुंबई की आर्थर रोड जेल में ह्यूमन राइट्स के मुताबिक रखा जाएगा। लेकिन सवाल ये है कि क्या वाकई चोकसी को वहां वो सुविधाएं मिलेंगी, जो भारत दावा कर रहा है। भारत ने बेल्जियम को एक पत्र भेजकर बताया कि चोकसी को आर्थर रोड जेल के बैरक नंबर 12 में रखा जाएगा।

सीएम से गायक मीका सिंह ने समत्व भवन में सौजन्य भेंट की

भोपाल (नप्र)। सिंगर मीका सिंह रविवार रात भोपाल पहुंचे और डीबी सिटी मॉल के चौथे फ्लोर पर बने स्टूडियो X O के स्टेज पर परफॉर्मेंस दी। सोमवार को उन्होंने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश निवास आने पर शॉल ओढ़ाकर उनका स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से गायक मीका सिंह ने समत्व भवन में भेंट की।

मीका ने गाया- भोपाल न सोया सारी रात- रविवार को शो के दौरान मीका दर्शकों को पंजाबी अंदाज में सतश्री काल भोपाल! कहकर रूबरू हुए और धमाकेदार अंदाज में दमा दम मस्त कलंदर गाने से शुरुआत की। पहले ही गाने पर डांस फ्लोर थिरक उठा और जब मीका ने सावन में लग गई आग छेड़ा, तो पूरा क्लब झूम उठा। इसके बाद उन्होंने अपने अंदाज में भोपाल न सोया सारी रात गाकर माहौल को और गरमा दिया। पार्टी का जोश तब और बढ़ा जब मीका ने भोपाल का मौसम बदलेगी और लैला तेरी ले लेगी सुनाया। भीड़ हूटिंग और तालियों से गूंज उठी। फैशन-लवर्स और युवाओं ने देर रात तक डांस फ्लोर पर थिरकते हुए इस म्यूजिक नाइट को मिनी फेस्टिवल में बदल दिया।

मीका ने ऑडियंस से कनेक्ट होते हुए कहा आप सब सूरमा भोपाली हो और आज की ये रात आप सबके नामज लव यू भोपाल! लेट नाइट तक चली इस पार्टी में मीका ने अपना लेटेस्ट ट्रैक लवर बॉय भी सुनाया। क्लब की ग्लिटरिंग लाइट्स, डीजे एनकेडी का हाई-वोल्टेज म्यूजिक और मीका का चार्म मिलकर इस शो को यादगार बना गए।

भोपाल में होगा 'क्षत्रिय क्रांति महासम्मेलन'

करणी सेना ने 10 सूत्रीय मांगों को लेकर सरकार को दिया अल्टीमेटम

भोपाल (नप्र)। समाज, किसान, युवाओं और धर्म-संस्कृति की रक्षा को लेकर क्षत्रिय करणी सेना ने बड़ा ऐलान किया है। भोपाल में हुई पत्रकार वार्ता में संगठन के प्रदेश अध्यक्ष इंदल सिंह राणा और प्रदेश उपाध्यक्ष आशु सिंह ने सरकार के सामने 10 सूत्रीय मांगें रखीं और साफ कहा कि अब समाज सिर्फ ज्ञापन नहीं देगा, बल्कि आंदोलन की राह पर चलेगा।प्रदेश अध्यक्ष इंदल सिंह राणा ने साफ कहा आरक्षण करणी सेना का मूल मुद्दा रहा है। जब तक सरकार इस पर संज्ञान लेकर ठोस निर्णय नहीं लेती, तब तक हम मैदान नहीं छोड़ेंगे। हमारी लड़ाई सिर्फ समाज के लिए नहीं, बल्कि किसान, जवान और युवाओं के भविष्य के लिए भी है। बता दें कि यह आयोजन 25 नवंबर को आयोजित किया जाएगा।

करणी सेना की 10 सूत्रीय मांगें

- हरदा कांड में दोषी पुलिसकर्मियों और अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई।
- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग आरक्षण को 10त्न से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करना और प्रक्रिया को ऑनलाइन सरल बनाना।
- अग्निवीर योजना खत्म कर पुरानी स्थायी सेना भर्ती बहाल करना।

- गौ माता को 'राष्ट्र माता' का दर्जा देकर कठोर कानून और गौशालाओं में सुधार।
- क्षत्रिय समाज को जनसंख्या के अनुपात में राजनीतिक प्रतिनिधित्व।
- सभी फसलों पर एमएसपी को कानूनी दर्जा और नुकसान की भरपाई समय पर।
- इतिहास-संस्कृति की रक्षा, महापुरुषों के अपमान पर रोक और भोजशाला रिपोर्ट सार्वजनिक करना।
- आरक्षण की समीक्षा, आधार केवल आर्थिक स्थिति हो।
- एट्रोसिटी एक्ट में सुधार और गिरफ्तारी केवल दोष सिद्ध होने पर।
- मठ-मंदिरों की जमीन को मंदिरों के नाम दर्ज करना और अवैध कब्जे हटाना।

प्रदेश में पति-पत्नी एक साथ बने आईएएस

राज्य प्रशासनिक सेवा के 16 अफसर पदोन्नत

राकेश कुशरे | नंदा भलावे कुशरे

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश कैडर के 16 राज्य प्रशासनिक सेवा (एसएएस) अधिकारियों को भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में पदोन्नत किया गया है। इनमें वे अधिकारी भी शामिल हैं जो विभागीय जांच के चलते पिछले सालों में प्रमोशन से वंचित रह गए थे। राकेश कुशरे और नंदा भलावे कुशरे को एक साथ पदोन्नति मिली है, वे पति-पत्नी हैं।

जांच में क्लीनचिट मिलने के बाद नारायण प्रसाद नामदेव और कैलाश बुंदेला भी आईएएस बन गए हैं। उज्जैन नगर निगम के पूर्व कमिश्नर आशीष पाठक को भी आईएएस में पदोन्नति दी गई है। मिनिस्ट्री ऑफ पर्सनल, पब्लिक ग्रीवेंस एंड पेंशन्स (डिपार्टमेंट ऑफ पर्सनल एंड ट्रेनिंग-डीओपीटी) की ओर से सोमवार को 2023 और 2024 बैच के लिए आईएएस अवॉर्ड का नोटिफिकेशन जारी किया गया।

इन दोनों ही सालों के लिए राज्य प्रशासनिक सेवा अधिकारियों की विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक पिछले महीने हुई थी। अब नोटिफिकेशन जारी होने के बाद इन दोनों सालों में 8-8, यानी कुल 16 अधिकारियों को आईएएस में पदोन्नत कर दिया गया है।

2023 बैच में इन्हें मिला आईएएस बनने का मौका- जिन आईएएस अफसरों को 2023 बैच के लिए हुई डीपीसी में आईएएस बनने का मौका मिला है। उसमें ये 8 अफसर शामिल हैं।

नारायण प्रसाद नामदेव
डॉ कैलाश बुंदेला
नंदा भलावे कुशरे
अनिल कुमार डामोर
सविता झानिया
सारिका भूरिया
कमल सोलंकी
जितेंद्र सिंह चौहान

2024 के लिए इनका हुआ आईएएस में सिलेक्शन- 2024 की डीपीसी के लिए जिन राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों का नाम चुना गया है, उसमें ये उज्जैन में पदस्थ अपर कलेक्टर संतोष टैगोर और पूर्व निगमायुक्त उज्जैन आशीष पाठक का नाम शामिल है। जो अधिकारी आईएएस बने उनके नाम हैं।

संतोष कुमार टैगोर
निशा डामर
राकेश कुशरे
शैली कनाश
रोहन सक्सेना
कविता बाटला
सपना अनुराग जैन
आशीष कुमार पाठक

विभागीय जांच और आयु अधिक होने के कारण नहीं बन पाए आईएएस- राज्य प्रशासनिक सेवा के सबसे सीनियर अफसरों में अब विवेक सिंह, पंकज शर्मा के नाम शामिल हैं, जो आईएएस अवॉर्ड के लिए तय आयु सीमा 56 साल से ऊपर निकल चुके हैं। इनके अलावा जयेंद्र कुमार विजयवत, मनोज मालवीय, कमल चंद्र नागर, द्वारका प्रसाद बर्मन, कमलेश पुरी, सरोधन सिंह को भी विभागीय जांच और आयु सीमा अधिक होने के चलते आईएएस बनने का मौका नहीं मिल पाया है।

एमपी सरकार को रेपिस्ट को 25 लाख मुआवजा देने का आदेश

सुप्रीम कोर्ट बोला- 7 साल सजा, 11 साल जेल में रखा, रिहा क्यों नहीं किया

भोपाल (नप्र)। सुप्रीम कोर्ट ने रेप के मामले में दोषी को 4 साल 7 महीने अतिरिक्त जेल में रखने के मामले में मप्र सरकार को 25 लाख का मुआवजा देने का आदेश दिया है। सागर जिले के इस मामले में आरोपी को सात साल की सजा सुनाई गई थी, लेकिन सजा की अवधि पूरी होने के बाद भी उसे रिहा नहीं किया गया। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस केवी विश्वनाथन की खंडपीठ ने मध्यप्रदेश सरकार की लापरवाही के लिए कड़ी फटकार लगाई। अदालत ने इसे 'गंभीर चूक' बताते हुए कहा कि इस तरह की अवैध हिरासत किसी भी हाल में स्वीकार्य नहीं है।

सुप्रीम कोर्ट ने माना प्रशासनिक विफलता- सुप्रीम कोर्ट ने सर्टिफिकेट/सेंटेंस कैलकुलेशन शीट, पैरोल-रिमिशन और अदालत के आदेशों के पालन की पूरी फाइल आज पेश करने को कहा गया था। कोर्ट ने तमाम दलीलें सुनने के बाद यह फैसला सुनाया।

ट्रायल कोर्ट ने दी थी उम्रकैद की सजा- सागर जिले के सोहन सिंह उर्फ बबलू को रेप के मामले में ट्रायल कोर्ट ने 2004 में उम्रकैद की सजा सुनाई थी। इसके खिलाफ सोहन सिंह ने मप्र हाईकोर्ट में अपील दायर की। अक्टूबर 2007 में हाईकोर्ट ने सजा को उम्रकैद से घटाकर 7 साल कर दी थी। 2021 में वो सजा के 7 साल पूरे हो गए, लेकिन सोहन की रिहाई नहीं हुई।

लीगल एड के जरिए वरिष्ठ अधिवक्ता महफूज ए नाजकी के पास इस केस की फाइल पहुंची। नाजकी ने पुलिस और लीगल एड टीम से बातचीत की। तो 6 जून 2025 को वह जेल से छूट गया। बाद में मुआवजा मांगा तो कोर्ट ने देखा कि साढ़े चार साल अतिरिक्त जेल में रखा।

दोषी ने 4 साल 7 महीने ज्यादा जेल में काटे

शुरुआत में जब मध्यप्रदेश सरकार को नोटिस जारी किया गया तो कोर्ट ने कहा था कि दोषी ने 8 साल अतिरिक्त कारावास की सजा काटी है। हालांकि, अदालत को सीनियर एडवोकेट नचिकेता जोशी (मध्यप्रदेश राज्य की ओर से) ने बताया कि दोषी कुछ समय से जमानत पर बाहर है।

दोषी की ओर से वकील महफूज ए. नाजकी ने कोर्ट को जानकारी दी। उसके अनुसार 4.7 साल की अतिरिक्त कारावास की सजा को ध्यान में रखते हुए मुआवजे का आदेश दिया गया।

भोपाल गैस त्रासदी पर सुनवाई

यूनियन कार्बाइड के दोषियों की अपील पर सीबीआई ने रखे तर्क

भोपाल (नप्र)। भोपाल यूनियन कार्बाइड के भारतीय दोषी अधिकारियों की अपील पर सोमवार को भोपाल के डिस्ट्रिक्ट एंड सेशंस (डीजे) कोर्ट में सुनवाई हुई। इस दौरान केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने अपने लिखित और मौखिक तर्क कोर्ट के समक्ष रखे।

2011 से लंबित इस आपराधिक अपील जे. मुकंद, एस.पी. चौधरी और किशोर कामदार ने दायर की है। तीनों दोषियों का कहना है कि 7 जून 2010 को भोपाल ट्रायल कोर्ट द्वारा दिया गया फैसला गलत था, इसलिए दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 464 के तहत पूरे मामले की पुनः सुनवाई कर नए आरोप तय किए जाएं।

सीबीआई ने तर्क दिया कि दोषियों द्वारा दायर याचिका सुनवाई योग्य नहीं है। एजेंसी ने बताया कि जिन धाराओं को चुनौती दी जा रही है, उन्हें सुप्रीम कोर्ट ने 13 सितंबर 1996 के आदेश में बरकरार रखा था। इसी आधार पर भोपाल ट्रायल कोर्ट ने 29 अगस्त 1997 से इन धाराओं पर सुनवाई शुरू की थी।

फुल टैंक लेवल 1666.80 फीट तक पहुंचा बड़ा तालाब

कोलार-केरवा डेम भी भरे, हमारी सालभर की पानी की जरूरत पूरी

भोपाल (नप्र)। बड़े तालाब के साथ ही कोलार और केरवा डेम भी लबालब हो गए हैं। सितंबर के पहले हफ्ते में ही शहर की करीब 14 लाख आबादी की साल भर की पानी की जरूरत पूरी हो गई है। जल संसाधन विभाग के ताजे आंकड़ों के मुताबिक, कोलार डेम का स्तर रविवार सुबह बढ़कर 459.87 मीटर हो गया। अब यह फुल रिजर्वायर लेवल (एफआरएल) 462.20 से लगभग 2 मीटर ही नीचे है।

कोलार डेम 82 प्रतिशत से ज्यादा भर चुका है। कोलार डेम से भोपाल शहर की साल भर की जरूरत के लिए 60 मिलियन क्यूबिक मीटर (60 अरब लीटर) पानी लिया जाता है। अब डेम में यह उपलब्ध है। केरवा डेम का जलस्तर भी रविवार सुबह बढ़कर 508.07 मीटर हो गया। इसका एफआरएल 509.93 मीटर है। नगर निगम के जल कार्य विभाग के सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर उदित गर्ग का कहना है कि इन तीनों स्रोतों से शहर की आबादी की सप्लाई के लिए पर्याप्त पानी जमा हो चुका है।

कोलार के कैचमेंट में सबसे कम बारिश, फिर भी अच्छा भर गया- इस बार कोलार के कैचमेंट एरिया में सबसे कम, सिर्फ 496 मिलीमीटर बारिश हुई। फिर भी यह बांध एफआरएल के करीब पहुंच गया।

पानी सप्लाई का गणित

कोलार डेम- नगर निगम इस बांध से 170 एमएलडी पानी ले है। इससे पुराना शहर, हमीदिया, छोला शिवाजी नगर, चार इमली, चूना भट्टी, शिवाजी नगर, अरेरा कॉलोनी, एमपी नगर की करीब 10 लाख आबादी को जल प्रदाय।

बड़ा तालाब- 110 मिलियन (एमएलडी) पानी लिया जा रहा है। यह बैरागढ़ पूरा, कोहेफिजा, ईदगाह हिल्स, हमीदिया रोड, रॉयल मार्केट, प्रोफेसर कॉलोनी, अंसल, जज कॉलोनी सहित अन्य इलाकों की 6 लाख आबादी को सप्लाई होता है।

केरवा डेम- इससे 20 एमएलडी पानी लिया जा रहा है। इससे सर्वधर्म पुल से पूरे कोलार क्षेत्र की 2.5 लाख से ज्यादा आबादी को सप्लाई।

नर्मदा नदी - 160 एमएलडी पानी - गोविंदपुरा, साकेत नगर, शक्ति नगर, होशंगाबाद रोड, बावड़िया कला और अशोका गार्डन, 80 फीट रोड, ऐशबाग की लगभग 10 लाख आबादी को यह पानी सप्लाई होता है।

ट्रक में टकराई तेज रफ्तार कार, युवक की मौत

भोपाल में दोस्तों से मिलने गया था, 1 साल पहले विदेश से पढ़ाई पूरी की

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वीआईपी रोड पर राजा भोज की प्रतिमा के पास सोमवार सुबह करीब 5 बजे एक तेज रफ्तार काले रंग की कार पीछे से एक ट्रक से टकरा गई। हादसे में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। कार में फंसे ड्राइवर को किसी तरह बाहर निकाला गया और तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

शांतनु अग्निहोत्री, मृतक

मृतक युवक की पहचान शांतनु अग्निहोत्री (29) के रूप में हुई है। वह कोलार स्थित दानिश कुंज का रहने वाला था। हाल ही में उसके दादा का निधन हुआ था और उनकी तेरहवीं के बाद रविवार को वह दोस्तों से मिलने एयरपोर्ट रोड की ओर गया था। सोमवार सुबह घर लौटते समय यह हादसा हो गया।

गार्डनिंग बिजनेस शुरू करने का था प्लान

परिवार के मुताबिक, शांतनु भारत में रहकर गार्डनिंग से जुड़ा बिजनेस शुरू करना चाहता था। शांतनु ने इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट न्यूजीलैंड से ग्रेजुएशन किया था। वह पिछले साल सितंबर में ही न्यूजीलैंड से लौटकर भोपाल आया था और यहीं परिवार के साथ रहने का फैसला किया था। युवक के पिता संजीव अग्निहोत्री मंडी बोर्ड में प्रोग्रामर हैं।

कार में अकेला ही था युवक

टीआई केजी शुक्ला के मुताबिक हमीदिया अस्पताल की सूचना पर मर्ग कायम किया है। घटना के समय कार में ड्राइवर अकेला ही था। तेज रफ्तार में कार आगे चल रहे ट्रक से टकरा गई।इससे कार का अगला हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। डेशबोर्ड और सीट के बीच चालक बुरी तरह से फंस गया था। राहगीरों ने 108 की मदद से उसे हमीदिया अस्पताल पहुंचाया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

जवाहर नवोदय विद्यालय में प्रवेश की प्रक्रिया शुरू

23 सितंबर तक जमा होंगे ऑनलाइन आवेदन,7 फरवरी 2026 को परीक्षा

भोपाल (नप्र)। जवाहर नवोदय विद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए कक्षा 9वीं और 11वीं में लैटरल एंट्री (पार्श्व प्रवेश परीक्षा) के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है। इच्छुक छात्र-छात्राएं ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 23 सितंबर है। चयन परीक्षा 7 फरवरी 2026 को आयोजित की जाएगी।

जवाहर नवोदय स्कूल में चयनित विद्यार्थियों को शिक्षा, आवास, भोजन, यूनिफॉर्म, पाठ्य-पुस्तकें और दैनिक उपयोग की वस्तुएं मुफ्त दी जाती हैं। इसके अलावा, आधुनिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत छात्रों को कम्प्यूटर, इंटरनेट और स्मार्ट क्लास जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं। यही कारण है कि हर साल बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स प्रवेश के लिए आवेदन करते हैं।

कक्षा 9वीं में प्रवेश के एलिजिबल कैंडिडेट

कक्षा 9वीं में प्रवेश के लिए वही विद्यार्थी एलिजिबल होंगे, जो किसी शासकीय या मान्यता प्राप्त अशासकीय स्कूल में सत्र 2025-26 के दौरान कक्षा 8वीं में अध्ययनरत हों। साथ ही, उनकी जन्मतिथि 01 मई 2011 से 31 जुलाई 2013 के बीच होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने भारतीय पुरुष हॉकी टीम को एशिया कप जीतने पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 8 वर्ष बाद पुन:-एशिया कप-2025 जीतने पर भारतीय पुरुष हॉकी टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय टीम की यह ऐतिहासिक विजय सभी खिलाड़ियों की दृढ़ इच्छा शक्ति, अद्वितीय खेल कौशल एवं टीम भावना का प्रमाण है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हॉकी नर्सरी के रूप में प्रतिष्ठित भोपाल सहित पूरे मध्यप्रदेश ने हॉकी के अनेक दिग्गज खिलाड़ी भारत को दिए हैं। भारतीय टीम की इस अद्वितीय विजय पर सभी गौरवान्वित है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं कीं।

उल्लेखनीय है कि बिहार के राजगीर में रविवार को खेले गए फाइनल मैच में भारत की हॉकी टीम ने दक्षिण कोरिया को 4-1 से हराया। भारतीय टीम ने 8 साल के अंतराल के बाद पुरुष एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट का खिताब पर कब्जा किया है।

कॉन्स्टेबल की बर्थडे पार्टी, एएसआई का अश्लील डांस

दतिया के होटल में बार डांसर्स के साथ किया सेलिब्रेशन, एसपी ने दोनों को सस्पेंड किया

दतिया (नप्र)। दतिया के सिविल लाइन थाने में पदस्थ एक एएसआई का बार डांसर्स के साथ अश्लील डांस वीडियो सामने आया है। वीडियो में एएसआई संजीव गौड़ दो महिलाओं के साथ फिल्मी गानों पर अश्लील हरकत करते नजर आ रहे हैं। मामले को गंभीरता से लेते हुए एसपी सूरज वर्मा ने एएसआई और एक कॉन्स्टेबल को सस्पेंड कर दिया है।दरअसल, 2 सितंबर को सिविल लाइन थाने में पदस्थ आरक्षक राहुल बौद्ध की बर्थडे पार्टी एक होटल में रखी गई थी। इस दौरान 2 बार डांसर्स को भी बुलाया गया था। सामने आए वीडियो में एएसआई संजीव गौड़ और कुछ अन्य युवक दोनों महिलाओं के साथ फिल्मी गानों पर डांस करते हुए अश्लील हरकतें करते दिखे।

एएसआई समेत बर्थडे बॉय कॉन्स्टेबल राहुल बौद्ध पर एक्शन- वीडियो सामने आने के बाद पुलिस विभाग हरकत में आया। दतिया एसपी ने फौरन कार्रवाई करते हुए एएसआई संजीव गौड़ और आरक्षक राहुल बौद्ध को सस्पेंड कर दिया है। एसपी सूरज वर्मा ने कहा- पुलिस विभाग की छवि खराब करने वाले किसी भी व्यवहार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

संपादकीय

टैरिफ का शिकार इशिबा

टैरिफ की राजनीति अब देशों में राजनेताओं की कुर्सी भी छीनने लगी है। जापान के प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा अपनी कुर्सी नहीं बचा सके और उनकी पार्टी के अल्पमत में आने के कारण उन्हें पद से इस्तीफा देना पड़ा। हालांकि जापान में इस तरह सरकारों का गिरना कोई नई बात नहीं है, लेकिन माना जा रहा है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से समुचित टैरिफ डील में नाकाम रहने के कारण शिगेरु के खिलाफ देश में नाराजी बढ़ रही थी। हालांकि शिगेरु ट्रंप द्वारा जापान पर आयद 27.5 फीसदी टैरिफ को 15 प्रतिशत तक लाने में कामयाब रहे थे, लेकिन जापान में शायद इसे भी नाकाफी माना गया। जापानी कंपनियां भी अमेरिका के मनमाने टैरिफ से परेशान हैं। खास बात यह है कि जापान में अधिकांश सरकारें अपना कार्यकाल पूरा करने में नाकाम रही हैं। वहां सरकार गिरने का मुख्य कारण घरेलू रहता आया है। दरअसल, अमेरिका-जापान व्यापार समझौते के जरिए ट्रंप ने कोशिश की थी कि जापान अमेरिकी बाजार पर अधिक निर्भर रहे। इसके लिए जापानी ऑटोमोबाइल, स्टील और टेक्नोलॉजी सेक्टर पर भारी दबाव डाला गया। इसका उल्टा असर पड़ा। देश में महंगाई बढ़ गई और घरेलू उद्योगों को नुकसान पहुंचा। साथ ही चीन और दक्षिण कोरिया जैसे पड़ोसी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा और भी तेज हो गई। शुरुआत में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने जापानी वाहनों पर 27.5 प्रतिशत का टैरिफ लागू किया था, जिसे बाद में 15 प्रति. पर लाया गया। रायटर की रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिकी टैरिफ की वजह से जापान को आर्थिक असमंजस का सामना करना पड़ा. क्योंकि अमेरिकी आदेश के आधार पर नए 15 प्रति. टैरिफ पुराने टैरिफ पर अतिरिक्त रूप से जोड़े गए, जिससे जापान की अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ गया। इस समझौते को निवेशकों ने जापान की ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री के लिए फायदेमंद माना गया। हालांकि इस समझौते के बावजूद इशिबा की राजनीतिक स्थिति मजबूत नहीं हो सकी। यद्यपि इस कदम से जापानी ऑटो इंडस्ट्री, विशेष रूप से टोयोटा और होंडा जैसी कंपनियों को बड़ी राहत मिली , क्योंकि यह सेक्टर जापान की अर्थव्यवस्था का लगभग 8 प्रति. हिस्सा है। बावजूद इसके शिगेरू का जनसमर्थन लगातार घटता गया। नतीजा यह रहा कि विपक्ष ने इस मौके को भुनाया और प्रधानमंत्री को इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। साथ ही सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी दोफाड़ होने की नौबत आ गयी थी। गौरतलब है कि इशिबा की गठबंधन सरकार जुलाई में हुए ऊपरी सदन (हाउस ऑफ काउंसलर्स) के चुनाव में हार गई थी। इशिबा ने इसके लिए हाल ही में माफी मांगी थी और कहा था कि वह इस्तीफा देने के बारे में निर्णय लेंगे। चुनावी हार के बाद एलडीपी के भीतर 'इशिबा को हटाओ' आंदोलन तेज हो गया था। जापानी संसद के उच्च सदन में कुल 248 सीटें हैं। इशिबा के गठबंधन के पास पहले से 75 सीटें थीं। बहुमत बनाए रखने के लिए उन्हें इस चुनाव में कम से कम 50 नई सीटों की जरूरत थी, लेकिन उन्हें केवल 47 सीटें ही मिल पाईं। इनमें से एलडीपी को 39 सीटें मिली थीं। यह हार पीएम इशिबा के लिए दूसरी बड़ी राजनीतिक असफलता थी। यह चुनाव उस वक्त हुआ जब जापान में महंगाई बढ़ी और अमेरिका के टैरिफ को लेकर लोगों में चिंता थी। चुनाव में हार के बावजूद प्रधानमंत्री इशिबा ने साफ कहा कि वह देश के लिए काम करते रहेंगे और अमेरिका के टैरिफ जैसे मुद्दों से निपटने की कोशिश करेंगे। इन मुद्दों को लेकर सत्तारूढ़ गठबंधन के खिलाफ नाराजगी देखी गई। हालांकि पिछले तीन प्रधानमंत्रियों ने जब उच्च सदन में बहुमत खोया था, तो उन्होंने दो महीनों के भीतर इस्तीफा दे दिया था। ऐसे में इशिबा पर भी दबाव बढ़ा। अंतत~उन्होंने भी त्यागपत्रभ दे दिया।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

अशिष्ट भारतीयों से कैसे बनेगा भारत विश्वगुरू

हमारे देश में गालियों का सम्मान होता रहा है। गालियाँ विवाह आदि मंगल कार्यक्रम में गई जाती थीं। वे गालियाँ, लड़कियां अपने से बड़ी महिलाओं के साथ गाती थीं। अपने ही लोग के बीच गाती थीं। ऐसी गालियों को सुनकर लोग विहवल होते थे। आनंदित होते थे। सारी गालियों की होती बौछार से बारातें निहाल हो जाती थीं। इन गालियों का सौन्दर्य-बोध लोक की बहुत लंबी परंपरा में विद्यमान है। गाँव और देहात के लोग जब अपनी ससुराल में गाली नहीं सुनते थे, तो उन्हें बुरा सा लगता था कि कोई हमारे स्वागत में गाली भी नहीं गाया। वे संबंधी छेड़ते थे कि उनकी पद में लगने वाली साली, सलहज और दूसरे गोती-पड़ोसी उन्हें गाली दें। यह गाली के गीत मिर्जापुर की एक प्रसिद्ध गायिका-समूह जिसकी स्मिता जी मुख्य गायिका है, प्राय: एकसाथ बैठकर गाती रहीं, और उसे आज भी लोग सुनते हैं। उसे यूट्यूब पर खोजकर लोग सुनते हैं। लोक में व्याप्त गालियाँ अब लोक से निकलकर राजनीति का किवाड़ खोल रही हैं और यह बिलकुल शोर में परिवर्तित हो चुकी हैं। राजनीति में इतनी गंदगी कहाँ से आती है जो अच्छे-बुरे को सही तरह से देख नहीं पाती।

भारत की जय हो, जहाँ आजकल गाली पर बहस तेज हो गयी है। भारत की गाली से भारत की जो फजीहत हो रही है, वह बहुत ही खेदजनक है। जिस देश में वेद, उपनिषद, पुराण की जय ध्वनि गूँजती थी, वहां अब गाली-गलौज खूब फल-फूल रही है। यह भारत का सबसे विद्रूप समय है। बेवजह की बहस करके समय नष्ट करती मीडिया पर तरस आती है। मीडिया को आखिर हो क्या गया है? ये किस प्रकार की मीडिया की सोच बन रही है? मीडिया की ईमानदारी और उसकी समझ के लिए अब ज़रूर भारतीय मीडिया को नोबेल पुरस्कार मिलने वाला है, ऐसा लगता है। देश में अनेक समस्याएं हैं। इस समय देश में पानी, बादल फटने की घटना और तबाह होती जिंदगी पर कोई मीडिया बहस आप नहीं देखेंगे। गाली पर बहस करते एंकर न जाने किस काठ के बने हुए हैं, खूब मन लगाकर बहस किए जा रहे हैं।

हमारे देश में गालियों का सम्मान होता रहा है। गालियाँ विवाह आदि मंगल कार्यक्रम में गई जाती थीं। वे गालियाँ, लड़कियां अपने से बड़ी महिलाओं के साथ गाती थीं। अपने ही लोग के बीच गाती थीं। ऐसी गालियों को सुनकर लोग विहवल होते थे। आनंदित होते थे। सारी गालियों की होती बौछार से बारातें निहाल हो जाती थीं। इन गालियों का सौन्दर्य-बोध लोक की बहुत लंबी परंपरा में विद्यमान है। गाँव और देहात के लोग जब अपनी ससुराल में गाली नहीं सुनते थे, तो उन्हें बुरा सा लगता था कि कोई हमारे स्वागत में गाली भी नहीं गाया। वे संबंधी छेड़ते थे कि उनकी पद में लगने वाली साली, सलहज और दूसरे गोती-पड़ोसी उन्हें गाली दें। यह गाली के गीत मिर्जापुर की एक प्रसिद्ध गायिका-समूह जिसकी स्मिता जी मुख्य गायिका है, प्रायः एकसाथ बैठकर गाती रहीं, और उसे आज भी लोग सुनते हैं। उसे यूट्यूब पर खोजकर लोग सुनते हैं। लोक में व्याप्त गालियाँ अब लोक से निकलकर राजनीति का किवाड़ खोल रही हैं और यह बिलकुल शोर में परिवर्तित हो चुकी हैं। राजनीति में इतनी गंदगी कहाँ से आती है जो अच्छे-बुरे को सही तरह से देख नहीं पाती।

बिहार में एक वोट अधिकार यात्रा के दौरान जब उस यात्रा के नेतृत्वकर्ता राहुल गाँधी व तेजश्वी यादव मंच से चले जाते हैं तो पीछे से आकर कुछ समय बाद एक मुस्लिम युवक द्वारा प्रधान मंत्री की माँ को गाली दी जाती है। राहुल गाँधी और तेजश्वी उस समय उस मंच पर नहीं थे, यह सत्य है। लेकिन चूँकि मंच व आरजेडी कांग्रेस का था। वहां झंडे कांग्रेस के थे, आरजेडी के थे तो ऐसे में उस मंच का उपयोग किया गया, यह बीजेपी का कहना है। प्रधान मंत्री ने अपनी जापान व चीन यात्रा पूरी की, उसके बाद भारत वापस आने पर कहा कि आप सब जानते हैं, अब मेरी मां का शरीर तो इस दुनिया में नहीं है। कुछ समय पहले 100 साल की उम्र पूरी करके वो हम सबको छोड़कर चली गई। मेरी उस मां को जिसका राजनीति से कोई लेना देना नहीं। जिसका शरीर भी अब नहीं है। मेरी उस मां को आरजेडी कांग्रेस के मंच से भद्दी-भद्दी गालियां दी गई। माताएं बहनें मैं देख रहा हूं आपके चेहरे, आपको भी कितना दर्द हुआ होगा। मैं देख रहा हूं कुछ माताओं की आंख में आंसू मुझे नजर आ रहे हैं। यह बहुत ही दुख देने वाला है, कष्ट देने वाला है, पीड़ा देने वाला है। क्या गुनाह, उस मां का क्या गुनाह? जिसे भद्दी गालियां सुना दी जाए। प्रधान मंत्री यहीं नहीं रुके बल्कि उन्होंने आगे भोजपुरी भाषा का सहारा लिया और कहा

माँ का स्थान, देवी-देवताओं से भी ऊपर माना जाता है। बिहार के ही संस्कार हैं, और हर बिहारी के मुंह से तो वो बात यूं ही निकलती है, माई के अ-स्थान देवता-पितर से भी ऊपर होला। काहे की आपन बाल-बच्चा खातिर, उ कौवनो देवी नियर परछाई बनके, पोस-पाल के बड़ करेली। खुदही दुख सहके देखावेली संसार। माई के बिना त कौवनो जिनगी भी ना पनप सकेला। एहिसे त बारी माई महान! इसीलिए साथियों, कांग्रेस-आरजेडी के मंच से गाली, भद्दी गाली केवल मेरी माँ को नहीं दी गई है। ये भद्दी-भद्दी गाली करोड़ों माताओं-बहनों को दी गई है।

गालियाँ किसी के भी माँ को दिया जाना निंदनीय है। अस्वीकार्य है। वीभत्स व विद्रूप मानसिकता की परिचायक है। यह बातें जो प्रधान मंत्री ने की वह राजनीति के आंच पर न रखकर यदि भावनात्मक रूप से देखें और गरिमा की दृष्टि से उसका विश्लेषण करें तो निश्चय ही बतौर प्रधान मंत्री स्त्रियों के ममत्व को उन्होंने बताया है। अपनी पीड़ा व्यक्त की है। स्त्रियों को दी जाने वाले गाली के नहीं सुने जाने वाले शब्द की भर्त्सना की ही जानी चाहिए। लेकिन विपक्ष इस पर घेराबंदी कर रहा है। इंदिरा जी के बारे में वर्षों पहले ऐसी गालियों का ज़िक्र मिलता है, जब यह कहा गया था कि गली-गली में झंडी है। इंदिरा गांधी....है। इस प्रकार के नारे लगाए गए। कुछ दिन पहले प्रधान मंत्री को तो सीधे अभद्र शब्द कहे गए। खैर, विपक्ष इस बात को लेकर घेर रहा है कि कुछ वर्ष पहले कहा गया जर्सी गाय, कांग्रेस की विधवा और 50 करोड़ की गर्ल-फ्रेंड। किसने कहा, यह सब विभिन्न चैनल व मीडिया में उपलब्ध है। यह सब भी एक प्रकार से गाली है जो कि निंदनीय है। अस्वीकार्य है। वीभत्स व विद्रूप मानसिकता की परिचायक है। अब सवाल यह है कि क्या राजनीतिक स्तर का यह पतन किसी भी सभी लोकतंत्र की पहचान है? क्या अब भारत में यही सब होगा? अब विश्वगुरु बनने की सारी बातें ताख पर रखकर जो मीडिया में पांच छः विश्लेषकों को बैठाकर फेंकरा जा रहा है, वह ठीक है क्या? देश के विकास की बातें अब औने-पौने की हो गयीं और यह गाली-गलौज बहस के लिए इतना ज़रूरी हो गया। अभी एक कांग्रेस प्रवक्ता के साथ बीजेपी प्रवक्ता की बहस हो रही थी। इसमें शुक्ला ने राजपूत की माँ को बहुत ही अपशब्द कह दिया जो कभी इंदिरा जी के लिए नारे में शब्द यूज किए गए हे। इसको देखते हुए जब प्रधान मंत्री ने अपनी माँ के बारे में बहुत सारी बातें कह रहे थे तो बीजेपी के प्रवक्ता द्वारा ऑनलाइन लाइव बहस में यूज किया गया शब्द प्रधान मंत्री की बातों पर भारी था। कायदे से ऐसे गालियों के लिए बदनाम प्रवक्ता की कोई ज़रूरत नहीं महसूस की जानी चाहिए। उसको न्याय व गरिमा के लिए शर्मिंदित किया जाना चाहिए। कांग्रेस व आरजेडी के मंच से जो हुआ वह भी शर्मनाक है लेकिन वह सब राहुल व तेजश्वी के अनुपस्थिति में हुआ इसलिए वहां बचाव है लेकिन प्रेम शुक्ल की अभद्र टिपण्णी निश्चय ही पीड़ादायी है क्योंकि माँ तो सबकी समान गरिमा रखती है।

हिन्दुस्तान में आखिर यह क्या हो रहा है, इस पर सभी अब दांतों तले अंगुलियाँ दबाकर आश्चर्य करने लगे हैं। देश में विकास व विस्तार के बजाय, विकसित राष्ट्र के संकल्प को पूर्ण करने के बजाय अब बहस के केंद्र में गालियाँ आ गयी हैं जो कि भारत को पतन की ओर ले जाने में सक्षम हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। लोक-बोध और सौन्दर्य-बोध वाली गालियों में खुश होने वाले देश में अब इतनी गिरावट आ गयी है कि गालियों का व्यापर करने वाली मीडिया व उसकी सारी मशीनरी इस खोज में हैं कि कोई और गाली दे और हम उस प्रोडक्ट को अपने टेलीविजन में बहस का हिस्सा बनाकर मुनाफा कमा लें। इस भारत के पतन का सबसे बड़ा कारण यही हमारी मानसिक गिरावटें होंगी। आने वाला इतिहास जब भी पढ़ा जायेगा, हमारी ही पीढ़ियाँ इसे पढ़कर हम पर हँसेंगी और जो गर्व हम अपने अतीत पर कर रहे हैं। आने वाली पीढ़ियों को गर्व करने के लिए ये गालियाँ उन्हें शर्मिंदा से भर देंगी कि हमारे पूर्वजों का समय कितना शर्मनाक था। इससे अशिष्ट भारतीयों से विश्वगुरू का स्वप्न चूर ही होगा।

विश्लेषण

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दो लड़कों की जोड़ी क्या बदल देगी बिहार की राजनीति ?

बिहार की सियासत इस समय सबसे गर्म मुद्दा बन चुकी है। भाजपा और नीतीश जहां सत्ता को खोना नहीं चाहते हैं। वहीं राहुल और तेजस्वी उन्हें नए नजरिए की राजनीति से सत्ता से बेदखल करना चाहते हैं। सत्ता और विपक्ष में सहमात का खेल जारी है। कौन किस पर भारी पड़ता है यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा। लेकिन बिहार के मतदाताओं पर राहुल गांधी की वोट अधिकार यात्रा का असर पड़ता दिख रहा है। अगर ऐसा न होता तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आँखों से आँसू न निकलते। अब पीएम मोदी के आंसुओं का बिहार के वोटरों पर कितना असर पड़ता है यह देखना होगा। लेकिन गाली -गलौज की राजनीति सभ्य लोकतंत्र के लिए दुःखद है। हमें सकारात्मक राजनीति करनी चाहिए। मोदी हमारे देश के पीएम हैं, किसी भी राजनैतिक मंच से इस तरह की अमर्यादित भाषा किसी के लिए हमारे राजनीति को गिराती है।

बिहार की राजनीति में एक तरफ राहुल गांधी की वोट अधिकार यात्रा, दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भावुक अपील और मां को गाली दिए जाने पर दरभंगा की रैली में चुनावी मंच से आंखें नम हो जाना। भावनात्मक पॉलिटिक्स की तरफ साफ इशारा करती है। पीएम मोदी इमोशनल पॉलिटिक्स करते हैं। विपक्ष जिस अस्त्र से हमला करता है मोदी उसे ही अपना अचूक हथियार बना कर विपक्ष पर पलटवार करते हैं। मोदी की चुनावी पॉलिटिक्स की यह सबसे बड़ी खूबी रही है। हालांकि जिस मंच से प्रधानमंत्री की मां को गाली दी गई उस मंच पर राहुल गांधी और तेजस्वी यादव मौजूद नहीं थे। मीडिया रिपोर्टर में कहा गया है। मोदी ने विपक्ष पर सीधा हमला करने के लिए इसे ब्रह्मास्त्र के तौर पर प्रयोग किया। अब इसका कितना असर होगा यह चुनावी परिणाम के बाद ही दिखेगा।

बिहार की पॉलिटिक्स में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कोई जोड़ नहीं है। वह मजे हुए राजनीतिज्ञ और रणनीतिकार हैं। उनके पास जाति समूह का भारी भरकम बैंक भी है। लेकिन अब उनकी उम्र राजनीति में बाधा बनती दिखती है। लम्बे वक्त से वे राज्य के मुख्यमंत्री हैं जिसकी वजह से एंटी इनकंबेंसी दिखती है। दूसरी तरह बिहार में पलायन, बेरोजगारी और विकास के मुद्दे जैसे आम सवाल हैं। जिस पर नीतीश सरकार की पकड़ ढीली पड़ रही है। आंतरिक तौर पर भाजपा को भी उन पर उतना भरोसा नहीं है। क्योंकि बिहार चुनाव के बाद इंडिया गठबंधन मजबूती से उभरता है तो भाजपा से दोस्ती फिर आसान नहीं होगी। दूसरी तरफ उनकी

अवसरवादी राजनीति से भाजपा भी सतर्क है। लेकिन चुनाव पूर्व नीतिश से रिश्तों को लेकर वह कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती।

राहुल गांधी अपनी वोट अधिकार यात्रा के जरिए सीधे जनता से जुड़ने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने मोदी सरकार और चुनाव आयोग पर सवाल खड़े किए हैं। राहुल गांधी की तरफ से चुनाव आयोग पर लगाए गए आरोप से भाजपा और आयोग की मुश्किल बढ़ी है। राहुल गांधी ने जिस तरह कथित वोट चोरी के मुद्दे पर प्रस्तुत किए गए दस्तावेज पर भी बौद्धिक वर्ग अपनी तरफ से चिंतन कर रहा है। विश्वसनीय संस्था चुनाव आयोग पर इस तरह से उठाए गए सवाल भी लोकतंत्र की अहमियत और उसकी गरिमा कम करते हैं। आयोग अपनी पारदर्शिता पर कुछ भी कहे, लेकिन एक बार सवाल तो उठी गए हैं। बिहार में भारी तादात में वोटरों का मतदाता सूची से नाम गायब होना बड़ा सवाल है।

राहुल गाँधी की वोट अधिकार यात्रा युवाओं, किसानों और गरीब तबके के हक को सामने रखकर उन्हें जागरूक करने का अभियान है। राहुल का फोकस यह दिखाने पर है कि केंद्र सरकार, लोकतंत्र और संविधान को कमजोर कर रही है। बिहार में उनकी यात्रा का असर खासकर युवाओं और वंचित तबकों पर देखा जा रहा है। अब आप राहुल गांधी की यह यात्रा, वोट में कितना तब्दील हो पाएगी यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा। लेकिन राहुल गांधी की निडर और जमीनी पॉलिटिक्स ने एक नई बहस को जन्म दिया है और हमारे लोकतांत्रिक संस्थाओं पर भी सवाल उठ खड़े हुए हैं। जिस पर नए सिरे से हमें विचार करने की आवश्यकता है।

बिहार बंद की राजनीति ने सियासत को और गरमा दिया। विपक्ष ने इसे जनता की आवाज बताया, तो सत्ता पक्ष ने इसे महज राजनीतिक नाटक करार दिया। बंद का असर पटना से लेकर जिला स्तर तक देखा गया। जनता खासकर महंगाई और बेरोजगारी को लेकर आक्रोशित है। लेकिन इस बंद को लेकर जनता बेहद परेशान दिखी और लोगों में बेहद आक्रोश देखा गया। जनता इस तरह की राजनीति पर भी काफी नाराज है। लोग सत्ता और विपक्ष में बंटे दिखाई दिए।

बिहार की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। लाखों युवा रोजगार की तलाश में दिल्ली, मुंबई, गुजरात और पंजाब जैसे राज्यों की ओर पलायन कर रहे हैं। सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी क्षेत्रों में सुधार की गति बेहद धीमी है। विकास की घोषणाएं तो बहुत हुईं, लेकिन जमीन पर असर नगण्य दिखा। यही कारण है कि जनता में नाराजगी बढ़ रही है। बिहार की चुनावी राजनीति पर नीतीश का जादू कितना चलेगा अभी इस पर कुछ कह पाना मुश्किल है। लेकिन नीतीश कुमार राजनीति के मजे हुए खिलाड़ी हैं उन्हें कमतर आंकना भी विपक्ष की भूल होगी।

बिहार में सीधा मुकाबला इंडिया और एनडीए गठबंधन के बीच होगा। एनडीए को भरोसा है कि बिहार में फिर मोदी और नीतीश का जादू चलेगा। लेकिन नीतीश कुमार की उम्र और तमाम सियासी मुद्दे गठबंधन की राजनीति पर प्रभाव डालेंगे। दूसरी तरफ राहुल गांधी और तेजस्वी की युवा राजनीति कि अग्नि परीक्षा भी है। लेकिन इंडिया गठबंधन में सीटों का बंटवारा भी एक बड़ा मुद्दा है। राहुल गांधी और तेजस्वी यह कैसे हल करते हैं यह उनकी राजनीतिक सूझबूझ बताएगी।

बिहार की जनता भावुक जरूर होती है, लेकिन साथ ही बेहद राजनीतिक सोच समझ भी रखती है। मोदी का रोना जनता को छू सकता है, लेकिन बेरोजगारी और पलायन जैसे मुद्दे कहीं ज्यादा गहरे असर डालते हैं। राहुल गांधी और तेजस्वी यादव युवाओं को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं। बिहार की राजनीति फिलहाल भावना और मुद्दों की जंग बन चुकी है। एक ओर मोदी आंसुओं के जरिए सहानुभूति जुटा रहे हैं, तो दूसरी ओर राहुल गांधी वोट अधिकार यात्रा से लोकतांत्रिक लड़ाई लड़ रहे हैं। अब यह कितना कारगर होगी वक्त बताएगा।

धार्मिक समागम में नेताओं की उपस्थिति के अर्थ

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

आमतौर पर विभिन्न समाज के धार्मिक समागमों में सामाजिक संगठन द्वारा राजनेताओं को भी आमंत्रित किया जाने लगा है। जिसके चलते इन्हें कुछ अंशों में राजनीतिक लाभ भी होता ही होगा। इसके अतिरिक्त सामाजिक नेता भी किसी न किसी रूप में राजनीतिक दृष्टि से उपकृत भी होते होंगे। ऐसे में राजनेता यदि धर्म विशेष के समागम में अपनी उपस्थिति देते हैं, तो इसके राजनीतिक निहितार्थ तो बहुत आसानी के साथ निकाले जा सकते हैं। दरअसल धर्म एक व्यक्तिगत आस्था एवं विश्वास का विषय है। जिसमें राजनेताओं की उपस्थिति आम नागरिकों को समाज विशेष के राजनीतिक दल विशेष के प्रति झुकाव की और इंगित करती है।

जबकि वास्तव में हर एक समाज में अलग-अलग राजनीतिक दल से संबद्ध नेता, कार्यकर्ता अथवा मतदाता होते है। आमतौर पर यह भी देखा गया है कि सामाजिक नेतृत्व अपनी राजनीतिक निष्ठा के चलते दल विशेष के राजनेता को धार्मिक आयोजन में आमंत्रित कर अपने सामाजिक प्रभाव को राजनीतिक उपलब्धि की दिशा में तब्दील कर देना चाहते हैं। इसके चलते अलग-अलग समाज में अलग-अलग राजनीतिक निष्ठा वाले लोगों का ध्रुवीकरण होने लगता है। ऐसी स्थिति में सामाजिक एकता के मूल ढांचे पर इस कदर कुठाराघात होने लगता है कि व्यक्तिगत मनमुटाव समाज को अलग-अलग धड़े में विभाजित कर देता है।

वैसे कुछ एक सामाजिक संगठन के कर्ताधर्ता धार्मिक समागम में राजनीतिक संतुलन का भी खयाल रखा करते हैं। जिसके चलते विभिन्न राजनीतिक दलों से संबद्ध राजनेताओं को भी आमंत्रित किया जाता है। लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि विभिन्न विचारधारा वर्ग वाले समस्त आमंत्रित राजनेता अपनी उपस्थिति प्रदान कर सकें। ऐसी स्थिति में फिर यह हो जाता है कि दल विशेष की राजनीतिक विचारधारा के प्रबल पक्षधर ही धार्मिक समागम में शिरकत करते हैं। यह आश्चर्य का विषय है कि विभिन्न धार्मिक समागमों में अति विशिष्ट राजनेता के आगमन पर विशेष ट्रीटमेंट दिया जाने लगता है। जिसे लेकर समाज विशेष के वर्ग विशेष के लिए यह खटकने वाली बात हो सकती है।

यही नहीं अपितु यह भी देखा गया है कि विभिन्न वैराग्य पथ के राही, धर्मोपदेशक एवं प्रवचनकार भी धार्मिक समागम में किसी स्थापित राजनेता के आने पर वक्ती तौर पर ही सही लेकिन उनसे प्रभावित नजर आते है। जहां तक राजनेताओं का सवाल है, तो भारी जन समूह से रूबरू होने की तमन्ना इनके दिल में हर पल रहा करती है। यही कारण है कि तमाम व्यस्तताओं के बावजूद धार्मिक समागम में समाज विशेष को उपकृत करने की भावना के साथ दौड़े-दौड़े चले आते है। कभी-कभी तो धार्मिक मंच से कुछ राजनेता उपस्थित जनसमूह को संबोधित तक कर डालते हैं। इसे लेकर कई बार विचित्र स्थिति निर्मित हो जाती है। खैर।

ऐसा नहीं होना चाहिए कि अपने पदीय आभामंडल के चलते धार्मिक प्रक्रिया पर विराम लगाते हुए उन्हें विशेष तवज्जो दी जाने लगे। वैसे धार्मिक समागम में राजनेताओं का आगमन संबंधित समाज को कुछ यूं संतुष्ट करता है कि हमारे धर्म की प्रभावना हो रही है। लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता। सीधे तौर पर कहा जाए तो धार्मिक समागम में किसी राजनेता के आने से उपस्थित जन समूह की एकाग्र धार्मिक निष्ठा अवरोधित होती है। वैसे भी हमारे देश-प्रदेश में यह धारणा आम है कि अमुक समाज अमुक दल का समर्थक है या कि विरोधी है। लेकिन ऐसा नहीं होता। ऐसे में अन्य राजनेताओं का भी व्यक्तिगत झुकाव या बैर भाव समाज विशेष के प्रति हो जाता है।

इस स्थिति के चलते न तो धर्म का भला होता है और न ही राजनीति का। दूसरी ओर देश के हालात कुछ इस कदर है कि राजनीतिक पूर्वाग्रह के चलते कभी किसी समाज को विशेष तौर पर तवज्जो दे दी जाती है, तो कभी किसी समाज विशेष को उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। इसके चलते सामाजिक संतुलन स्थापित नहीं हो पाता। एक ही समाज में अलग-अलग राजनीतिक विचारधारा में टकराव की स्थिति निर्मित हो जाती है। परिणाम यह निकलता है कि सामाजिक एकता और अखंडता पर प्रश्नचिन्ह लगने लगता है। जिसके चलते अलग-अलग समाज में तरह-तरह की खींचतान का दृश्य उपस्थित हो जाता है।

वैसे धार्मिक समागम में किसी राजनेता को आमंत्रित करने के प्रति सच्चे श्रद्धालुओं के मन में कोई विशेष आग्रह नहीं रहता। लेकिन समाज के बीच अपना राजनीतिक प्रभुत्व दर्शाने के निमित्त से सामाजिक नेता किसी राजनेता विशेष को अपने समाज के धार्मिक समागम में ससम्मान आमंत्रित करते है। इससे राजनेता और सामाजिक नेता उभय पक्ष को चाहे इसका लाभ मिला करता हो लेकिन शेष समाजजन पर इसका कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं होता। कई बार तो ऐसा भी होता है कि धार्मिक समागम में किसी राजनेता के आने से जन समूह की धार्मिक तल्लीनता तक खंडित हो जाती है। यही नहीं अपितु कुछ समय के लिए धर्म की धारा राजनीतिक धारा में तब्दील दिखाई देती है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

गरीब का जीना भी कोई जीना है लल्लू !

इन दिनों यमराज और उनका पूरा डिपार्टमेंट हैरान परेशान है। चित्रगुप्त का और चुनाव आयोग के डाटा का आपस में मिलान नहीं हो पा रहा। यमदूत जिसकी आत्मा लेने इहलोक में आते हैं मतदाता सूची में वे ऑलरेडी मरे हुए निकलते हैं। बीस बाईस लाख आत्माएँ तो अकेले बिहार में हैं जो मरने के बाद भी सशरीर आर्यावर्त में ही घूम रहीं हैं। चुनाव आयोग उनको जिन्दा नहीं मान रहा और यमदूत उनको ले जा नहीं पा रहे। 'सलीम तुम्हें मरने नहीं देगा और अनारकली हम तुम्हें जीने नहीं देंगे' टाईप का मामला है। वैसे हमारा चुनाव आयोग निष्पक्ष और निडर है। उसने चित्रगुप्त को एफेडेविट देकर साफ़ साफ़ बोल दिया है कि जो मरे नहीं उनके नाम एक सितम्बर तक बता दें हम वेरीफाई करा लेंगे, शेष आत्माएँ आप ले जाईए परलोक में। बैकुंठ में रखिए, स्वर्ग में रखिए, नर्क में रखिए, बफर ज़ोन में रखिए - कहीं भी रखिए, ये आपका सरदर्द है। आर्यावर्त में नहीं रहेंगे। आप ले जा पाए तो ठीक, नहीं तो सशरीर पृथ्वीलोक में ही उनको कहीं डिपोर्ट कर दिया जावेगा।

चित्रगुप्त की परेशानी यहीं तक सीमित नहीं है। हजारों मामलों में यमदूत रोजाना बिना आत्मा लिए खाली हाथ वापस आ जा रहे हैं। अब आप इन पंक्तियों के लेखक का ही मामला लीजिए। पिछले दिनों यमदूत उनको लेने आया था और कंफ्यूज होकर वापस चला गया, खाली हाथ। जाकर चित्रगुप्त को रिपोर्ट किया - प्रभु, सेम पर्सन, सेम वोटर आईडी। फोटो में भी सेम-टू-सेम सांतिभिया उज्जैन में भी मिले, लखनऊ में भी, बेंगलुरु में भी, फिर महाराष्ट्र में भी। मैं कौनसे वाले सांतिभिया को लाता, टेल-मी।

पिताजी के नाम से मिलान करके ले आना था।

प्रभु, फादर का नाम ऐसा उजबक् कि कांट प्रोनाउंस। क्या तो लिखा था एएसडी फ़जी।।।।समथिंग लाईक देट।

यमदूत होकर इत्ती अंग्रेजी बोलते हो!!

सॉरी सर, पिछले दिनों ही आर्यावर्त में ट्रान्सफर होकर आया हूँ। पहले लंदन से आत्माएँ लाता था।

उधर सांतिभिया भी खुश। न कभी डाटा टेली होगा न कभी वे मरेंगे, और चार जगह वोट डालने को मिलेगा सो बोनस में। डेमोक्रेसी मज़बूत करने के लिए एक से ज्यादा निर्वाचन क्षेत्रों में वोट डालकर वे अपना अप्रतिम योगदान देते रहेंगे। आर्यावर्त के लोकतंत्र में जिन्दा रहना भी एक कला है। काश, सावित्री को यह कला आती। उसने चुनाव आयोग से संपर्क किया होता तो सत्यवान को वापस लाने के लिए यमराज की चिरौरी नहीं करनी पड़ती।

बहरहाल, ऐसा सभी मामलों में नहीं हुआ है। बहुत से लोग सच में जिन्दा मिले हैं मगर उनकी कद-काठी चित्रगुप्त के रिकार्ड से मैच नहीं कर रही। उनको आदमकद होना था मगर वे कद में इतने छोटे-छोटे थे कि एक कमरे के मकान में एक सौ अस्सी की संख्या में समाए हुए थे। बरसों से बंद एक कमरे में सैकड़ों की संख्या में घूमते तिलचट्टों नुमा। यमदूत फिर कन्फ्यूज्ड। खचाखच भरे एक कमरे के मकान में पाँव रख पाना मुश्किल तो आत्मा निकालकर बाहर लाएँ कैसे?

वैसे आप और हम इस बात पर और अधिक गर्व कर सकते हैं भारत ने दुनिया को शून्य की अवधारणा दी और आयोग ने उसका उपयोग हजारों मकानों को पहचान देने में किया है। महान भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के बाद ये चुनाव आयोग ही है जिसने शून्य का इतना शानदार उपयोग किया है। ये बात और है कि इससे यमदूत चकरघिन्नी हो गए हैं कौनसे वाले ज़ीरो नंबर के मकान से आत्मा ले जाना है, समझ नहीं आता।

यमदूतों का जॉब इतना कठिन कभी नहीं रहा श्रीमान् जितना इन दिनों हो गया है। एक मकान में वे एक सौ चौबीस वर्षीय महिला को लेने के लिए पहुँचे। महिला की आत्मा ने साथ में चलने से मना कर दिया, कहा - 'फर्स्ट-टाईम वोटर हूँ मैं, मैंने अभी-अभी तो फॉर्म सिक्स भरकर वोटरलिस्ट में नाम जुड़वाया है। अभी से मैं आपके साथ कैसे चल सकती हूँ। दो-चार बार वोट डालने तो दीजिए। दो हज़ार सैंतालीस का विकसित भारत देख लूं, फिर चलूंगी,' बेचारा यमदूत, मुँह लटकाकर वापस चला गया।

आंकड़ों के मिलान, चेकिंग, बेलेंसिंग, रिकन्सिलीएशन ने इन दिनों आर्यावर्त में जन्म-मृत्यु का सिस्टम बिगाड़ दिया है। चुनाव आयोग एक स्वायत्त, संवैधानिक संस्था है, उसकी विश्वसनीयता संदेह से परे है। रिकार्ड तो चित्रगुप्त को ही अपना ठीक करना पड़ेगा। गरीब, अनपढ़, प्रवासी, अल्पसंख्यकों को मृत दिखाकर बीएलओ ने अपनी ड्यूटी निभा दी है अब उन आत्माओं को आर्यावर्त से ले जाना यमराज के डिपार्टमेंट की जिम्मेदारी है। वैसे आर्यावर्त में गरीब का जीना भी कोई जीना है लल्लू!!

श्राद्ध पक्ष

डॉ. तेज प्रकाश पूर्णानन्द व्यास

(सनातन धर्म के अंतरराष्ट्रीय प्रवर्तक एवं अध्येता)

श्राद्ध: धर्म, अध्यात्म, विज्ञान का समन्वय

श्रद्धावान पुरुष, जो इन्द्रियों को संयमित कर एकाग्रचित्त रहता है, वह ज्ञान की प्राप्ति करता है। और जब ज्ञान प्राप्त होता है, तो वह शीघ्र ही परम शांति को प्राप्त कर लेता है। इस श्लोक से स्पष्ट होता है कि श्रद्धा केवल विश्वास नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, शांति और आत्मानुभूति का पुल है। श्रद्धा मनुष्य को सहानुभूति, परोपकार और करुणा की धारा से जोड़कर अखंड आनंद की अनुभूति कराती है। यही श्रद्धा हमें अस्थिरता से स्थितप्रज्ञता, अज्ञान से ज्ञान और मानवता से ईश्वरत्व की ओर अग्रसर करती है। अतः श्रद्धा ही जीवन का अमृत सूत्र है, जो मनुष्य को आत्मिक उत्कर्ष, कृतज्ञता और दिव्य शांति से आलोकित करती है।

श्रद्धा केवल पूजन या औपचारिक सम्मान का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह आत्मा की गहराइयों से प्रस्फुटित होने वाली दिव्य भावना है। यह वह शक्ति है जो मनुष्य को करुणा , कृतज्ञता , दया, परोपकार, सहानुभूति सह-अनुभूति और आंतरिक शांति से भर देती है।

जब कोई मनुष्य श्रद्धा से श्राद्ध करता है, तो वह केवल अपने पूर्वजों या ईश्वर का स्मरण नहीं करता, बल्कि अपने भीतर मानवता और आत्मिक जागृति का दीपक प्रज्वलित करता है। श्रद्धा से उत्पन्न भाव ही धैर्य प्रदान करते हैं और वही हमें स्थितप्रज्ञता की ओर ले जाते हैं - जहाँ सुख-दुःख, लाभ-हानि और मान-अपमान समान रूप से स्वीकार किए जाते हैं। यही अवस्था सच्चे जीवन का आनंद और संतुलन है।

भगवद्गीता का यह श्लोक श्रद्धा का श्रेष्ठ स्वरूप दर्शाता है-

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥ (गीता 4.39)

श्रद्धावान पुरुष, जो इन्द्रियों को संयमित कर एकाग्रचित्त रहता है, वह ज्ञान की प्राप्ति करता है। और जब ज्ञान प्राप्त होता है, तो वह शीघ्र ही परम शांति को प्राप्त कर लेता है।

इस श्लोक से स्पष्ट होता है कि श्रद्धा केवल विश्वास नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, शांति और आत्मानुभूति का पुल है।

श्रद्धा मनुष्य को सहानुभूति, परोपकार और करुणा की धारा से जोड़कर अखंड आनंद की अनुभूति कराती है। यही श्रद्धा हमें अस्थिरता से स्थितप्रज्ञता, अज्ञान से ज्ञान और मानवता से ईश्वरत्व की ओर अग्रसर करती है।

अतः श्रद्धा ही जीवन का अमृत सूत्र है, जो मनुष्य को आत्मिक उत्कर्ष, कृतज्ञता और दिव्य शांति से आलोकित करती है।

1. भूमिका - श्राद्ध का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय सनातन धर्म में श्राद्ध केवल एक कर्मकांड मात्र नहीं है, बल्कि यह पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता का पर्व है।

श्रद्धया यत् क्रियते तत् श्राद्धम्- जिस कर्म में श्रद्धा हो वही श्राद्ध है।

यह पर्व हमें यह स्मरण कराता है कि हमारी वंश परंपरा केवल जीवित व्यक्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि हमारी जड़ें हमारे पूर्वजों से जुड़ी हैं।

हर वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक चलने वाला यह पितृ पक्ष (कुल 16 दिन) हमारे पूर्वजों का स्मरण और उनके आवाहन का काल है। इन दिनों पितृलोक के द्वार खुलते हैं और पितृ अपनी संतान से मिलने आते हैं।

2. धार्मिक दृष्टिकोण से श्राद्ध का महत्व

(क) शास्त्रीय परिभाषा

मनुस्मृति में कहा गया है -

श्रद्धया यत्क्रियते यत्र पितृदेवद्विजातिषु। तत्तु श्राद्धं प्रकीर्तितन्ते शास्त्रदृष्ट्या मनीषिभिः॥

जिसका संपादन श्रद्धा और विश्वास से किया जाए वही श्राद्ध है।

महाभारत (अनुशासन पर्व) -

पितर्णिां तु प्रसादेन सर्वान् कामानवाप्नुयात।

पितरों की प्रसन्नता से जीवित मनुष्य सभी इच्छाओं की प्राप्ति करता है।

(ख) अनुष्ठान की प्रक्रिया

1. तर्पण (जल अर्पण)- अंजलि में जल भरकर सूर्य और पितरों को अर्पित करना। इसमें काले तिल का उपयोग होता है। जल को सूर्य की किरणें अवशोषित कर पितृलोक तक पहुंचाती हैं।

2. पिंडदान (अन्न समर्पण)- चावल, जौ, तिल आदि का पिंड बनाकर अर्पित करना। यह पितरों की क्षुधा शांति का प्रतीक है।

3. हवन (अग्नि समर्पण)- अग्नि को अन्न समर्पित करना। अग्निदेव इसे धूम के माध्यम से वायुमंडल और प्राणवायु में परिवर्तित करते हैं।

4. पितृ स्वागत- घर के द्वार पर दीप, रंगोली, पुष्प अर्पण कर पूर्वजों का स्वागत करना।

(ग) धार्मिक फल

पितर तृप्त होकर वंशज को आशीर्वाद और समृद्धि प्रदान करते हैं। यह पितृ ऋण से मुक्ति का साधन है।

3. आध्यात्मिक दृष्टिकोण से श्राद्ध

(क) पितृ और सूक्ष्म शरीर

हिंदू दर्शन में स्थूल शरीर मृत्यु के बाद नष्ट हो जाता है, लेकिन सूक्ष्म शरीर (मन, प्राण, संस्कारों का बंध) जीवित रहता है।

पितर इसी सूक्ष्म रूप में अपनी संतान तक पहुँचते हैं।

(ख) पूर्वजों का आशीर्वाद

गरुड़ पुराण में कहा गया है यस्य तुष्टाः पितरः स्युः तस्य तुष्यन्ति देवताः। यः पितर्नि् न तर्पयति तस्य तुष्यन्ति नापि देवाः॥ जिसके पितर प्रसन्न होते हैं, देवता भी उसी पर प्रसन्न होते हैं।

(ग) मनोवैज्ञानिक और आत्मिक प्रभाव

श्राद्ध से परिवार में स्मृति, कृतज्ञता और एकता का भाव बढ़ता है। पितरों का स्मरण हमें जीवन में कर्तव्य पालन और धार्मिक अनुशासन की शिक्षा देता है।

4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण से श्राद्ध

(क) जल और तर्पण

जब हम जल में तिल डालकर सूर्य की ओर अर्पित करते हैं तो वह सूर्यकिरणों द्वारा वाष्पीकृत होकर वातावरण में पहुँचता है।

यह जलचक्र (Water Cycle) का प्रतीक है।

मनुष्य की भावनाएँ और संकल्प विज्ञान के अनुसार भी कंपन (Vibrations) उत्पन्न करते हैं, जो वातावरण पर प्रभाव डालते हैं।

(ख) पिंडदान और अन्न का महत्व

चावल और तिल जीवन का प्रतीक हैं।

अन्न का समर्पण यह दर्शाता है कि जीवन ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होती, बल्कि एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती है।

(ग) कृषि और पारिस्थितिकी से संबंध

भाद्रपद-.आश्विन का काल कृषि दृष्टि से महत्वपूर्ण है। वर्षा ऋतु के बाद खेत हरियाली से भर जाते हैं। यह काल नवजीवन और पुनः सृजन का प्रतीक है। श्राद्ध के समय किया गया हवन और अन्न दान पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक है।

(घ) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

पूर्वजों का स्मरण पॉजिटिव साइकोलॉजी की दृष्टि से कृतज्ञता (Gratitude) का अभ्यास है।

शोध बताते हैं कि कृतज्ञता का अभ्यास करने वाले व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक संतुलित और स्वस्थ रहते हैं।

5. समाज एवं नैतिक दृष्टिकोण

(क) पीढ़ियों का सेतु

श्राद्ध हमें हमारी परंपरा और जड़ों से जोड़ता है।

यह जीवित माता-पिता और बुजुर्गों के प्रति सेवा और सम्मान का स्मरण कराता है।

(ख) आधुनिक समाज की चुनौती

आज जब लोग अपने जीवित माता-पिता की उपेक्षा कर रहे हैं, श्राद्ध हमें यह चेतावनी देता है कि यदि हम पूर्वजों और बड़ों का सम्मान नहीं करेंगे तो समाज में हिंसा, अमानवीयता और असंस्कृति का प्रसार होगा।

(ग) वैश्विक परिप्रेक्ष्य- आज दुनिया युद्ध, हिंसा और पर्यावरण संकट से जूझ रही है। श्राद्ध का मूल संदेश है– आदर, कृतज्ञता और संतुलन। यही भाव विश्व शांति और कल्याण का आधार है।

6. मंत्र और उद्धरण

1. श्राद्ध सूत्र- श्रृतसत्यं दधाति यथा क्रियया सा श्रद्धा , श्रद्धया यत्क्रियते तत्श्राद्धम्

श्रद्धा से किया गया कर्म ही श्राद्ध है।

2. तर्पण सूत्र- तृपयन्ति तर्पयन्ति येन पितृं तत्तर्पणम्- जिससे पितर तृप्त हों वही तर्पण है।

3. गरुड़ पुराण- यस्य तुष्टाः पितरः स्युः तस्य तुष्यन्ति देवताः।

4. शांति मंत्र-

? शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दैविक, भौतिक और आध्यात्मिक तीनों संतापों से मुक्ति।

7. निष्कर्ष- श्राद्ध एक समग्र जीवन-दर्शन है।

यह धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक शांति और वैज्ञानिक दृष्टि का अद्भुत संगम है।

धर्म के स्तर पर यह पितरों की तृप्ति और आशीर्वाद का साधन है।

अध्यात्म के स्तर पर यह सूक्ष्म चेतना से संवाद है।

विज्ञान के स्तर पर यह प्रकृति, जल और ऊर्जा चक्र का संतुलन है। समाज के स्तर पर यह संस्कार, कर्तव्य और कृतज्ञता का स्मरण है।

इस प्रकार श्राद्ध पर्व हमें यह सिखाता है कि–

जो अपने पूर्वजों को नहीं भूलता, वही भविष्य में महान बनता है।

आपदा

अस्मिता सिंह

लेखक शोधार्थी हैं।

बाढ़ में आया सवालों का प्रवाह

भारत एक ऐसा देश है जहाँ बाढ़ अब केवल मौसमी प्राकृतिक आपदा नहीं रह गई, बल्कि हर वर्ष सामाजिक और प्रशासनिक चुनौती के रूप में सामने आती है। रावी नदी की बाढ़ केवल प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि मानवीय उपेक्षा और तंत्र की विफलता का भी ताज़ा उदाहरण है। रावी, जो कभी जीवनदायिनी कही जाती थी, आज हिमाचल से लेकर पंजाब तक भयानक रूप के साथ अपने किनारों पर संकट और सवाल बनकर उमड़ रही है।

दरअसल रावी नदी हिमाचल प्रदेश के चंबा ज़िले की धौलाधार पर्वतमाला से निकलती है और हिमाचल व पंजाब से होकर पाकिस्तान पहुँचकर सतलज में मिलती है। लगभग 725 किमी लंबी यह नदी सिंधु तंत्र का हिस्सा है। 1960 की सिंधु जल संधि ने इसके जल को भारत के हिस्से में सुनिश्चित किया। इतिहास और संस्कृति से जुड़ी रावी चंबा, कांगड़ा और पंजाब की अनेक बस्तियों की जीवनरेखा रही है।

रावी का यह भी विडंबनापूर्ण इतिहास है कि कभी इसकी धाराएँ प्रचुर जल से भरपूर थीं, किंतु अनियंत्रित निर्माण और जलविनियोजन ने इसके प्रवाह को इतना कमजोर कर दिया कि कई हिस्से सूखे पड़े रहे। आज जब नदी ने उफान लिया, तो यह उफान स्वाभाविक न होकर मानवजनित कारणों से और घातक सिद्ध हुआ।

दरअसल बादल तब फटते हैं जब आकाश में भाप और पानी का संतुलन बिगड़ जाता है। वनों की कमी या जंगलों की कटाई इस प्रक्रिया को और तीव्र कर देती है। पहाड़ी क्षेत्रों के जंगल इस प्रक्रिया को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करते हैं। ये जंगल प्राकृतिक 'स्पंज' की तरह काम करते हैं वे बारिश का पानी सोखते हैं और उसे धीरे-धीरे नदियों में छोड़ते हैं, जिससे अचानक बाढ़ की स्थिति नहीं बनती।

लेकिन रावी के क्षेत्र में जब जंगलों की अवैध कटाई होती है, तो यह संतुलन टूट जाता है। बारिश का पानी सीधे नदियों में गिरता है और उनका बहाव बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप, सामान्य बारिश भी अचानक बाढ़ का रूप ले लेती है। यानी, जंगलों की कटाई न केवल धरती की हरी-भरी छाया को कम करती है, बल्कि नदियों में पानी के अचानक बढ़ने और आपदा उत्पन्न होने का कारण भी बनती है।

37 साल बाद रावी की बाढ़ केवल पानी का सैलाब नहीं लाई, बल्कि पहाड़ों की टूटती हरियाली की सच्चाई भी उजागर कर गई। लहरों

में बहकर आए वृक्ष गवाह बने उस लापरवाह कटाई के, जिसने पहाड़ों की सांसें छीन लीं। इनमें देवदार, तोश, कैल, चील, पियाक और चौड़ी पत्ती वाले पेड़ों की अन्य प्रजातियाँ शामिल हैं। जो यह स्पष्ट करती है कि पहाड़ों के जंगल वर्षों से अंधाधुंध कटाई का शिकार रहे हैं। अवैध कटाई को रोकने की ज़िम्मेदारी रखने वाली व्यवस्था की उदासीनता ने इस संकट को और गहरा किया है। इस आपदा की एक और वजह नदी के बहाव क्षेत्र में अनियंत्रित निर्माण भी है, जिसने प्राकृतिक धारा को बाधित कर विनाश की तीव्रता और बढ़ा दी।

इस संकट का दूसरा पहलू यह है कि सरकारें पहाड़ों में निर्माण कार्यों को लेकर संवेदनशील नहीं हैं। माउंटेन इंजीनियरिंग जैसी वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग लगभग नहीं के बराबर होता। संवेदनशील भूभागों में सड़क, बांध और इमारतें इस तरह बनाई जाती हैं, मानो ये मैदानी इलाकों में हों। परिणामस्वरूप जैव विविधता नष्ट होती है और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है।

यह लापरवाही जब बाढ़ या भूस्खलन का रूप लेती है, तो केवल प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि प्रशासनिक उपेक्षा भी सामने आती है। सुप्रीम कोर्ट का संज्ञान यह स्पष्ट करता है कि यह केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि हमारी व्यवस्थाओं की मजबूती पर भी प्रश्नचिन्ह है। यदि बाढ़ में बहकर इतनी लकड़ियाँ आ सकती हैं, तो इसका अर्थ यह है कि वर्षों से वन कटाई और अवैध शोषण जारी रहा है। और यदि हमारी व्यवस्थाएँ इस पर काबू पाने में असफल रही हैं, तो इसका तात्पर्य यह है कि हमारी संस्थाएँ भी प्रकृति के साथ अन्याय में सहभागी बन चुकी हैं। यहाँ प्रश्न केवल सुप्रीम कोर्ट के संज्ञान का नहीं, बल्कि मानव विवेक का भी है। अगर जंगलों का विनाश इसी तरह जारी रहा, तो हमारे भविष्य की क्या दशा होगी?

बहरहाल रावी की बाढ़ हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम केवल आपदा के बाद आँकड़े गिनने के लिए ही बचे रहेंगे? या फिर हम समय रहते यह समझेंगे कि पहाड़ों, नदियों और जंगलों की सुरक्षा केवल पर्यावरण का सवाल नहीं है, यह हमारे भविष्य की सुरक्षा का प्रश्न भी है। अगर हम अभी नहीं जागे, तो अगली बाढ़ में बहकर जाएँगी न केवल लकड़ियाँ, बल्कि हमारी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी भी।

श्राद्ध परंपरा

खुमानसिंह चुंडावत

पितृपक्ष- कृतज्ञता का पर्व

पितृपक्ष शब्द स्वयं में ही इसका अर्थ समाहित किए हुए है- 'पितृ' यानी पूर्वज और 'पक्ष' यानी पखवाड़ा। यह वह 16 दिन का समय है, जब हम अपने उन पूर्वजों को याद करते हैं, जो इस दुनिया से जा चुके हैं। यह सिर्फ उन्हें याद करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके प्रति हमारे आभार को व्यक्त करने का एक तरीका है। यह हमें यह याद दिलाता है कि हम उनकी देन हैं–उनकी मेहनत, उनके संघर्ष और उनके दिए हुए संस्कारों के कारण ही हम आज यहाँ हैं। यह एक तरह से अपनी जड़ों को याद करने का पर्व है।

भारतीय जीवन दर्शन विविधताओं और विरोधाभासों से भरा हुआ है। यहाँ जीवन और मृत्यु को एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि एक ही चक्र का हिस्सा माना जाता है। इसी दर्शन का एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान पितृपक्ष है, जिसे अक्सर शोक का पर्व समझा जाता है। परंतु यदि हम इसकी गहराई में जाएँ, तो यह शोक नहीं, बल्कि कृतज्ञता, सम्मान और जीवन के निरंतर प्रवाह का उत्सव है।

पितृपक्ष का वास्तविक अर्थ

पितृपक्ष शब्द स्वयं में ही इसका अर्थ समाहित किए हुए है- 'पितृ' यानी पूर्वज और 'पक्ष' यानी पखवाड़ा। यह वह 16 दिन का समय है, जब हम अपने उन पूर्वजों को याद करते हैं, जो इस दुनिया से जा चुके हैं। यह सिर्फ उन्हें याद करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके प्रति हमारे आभार को व्यक्त करने का एक तरीका है। यह हमें यह याद दिलाता है कि हम उनकी देन हैं–उनकी मेहनत, उनके संघर्ष और उनके दिए हुए संस्कारों के कारण ही हम आज यहाँ हैं। यह एक तरह से अपनी जड़ों को याद करने का पर्व है।

पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता

मानव जीवन केवल संयोग से प्राप्त नहीं होता, बल्कि यह हमारी पीढ़ियों की निरंतरता का अमूल्य उपहार है। हमारे पूर्वज, दादा-दादी और माता-पिता ने जिस तरह अपनी जीवन-यात्रा में त्याग, तपस्या और संस्कारों की धारा बहाई, उसी का परिणाम है कि आज हम इस जीवन और संस्कृति का अनुभव कर पा रहे हैं। हमारा वंश एक वटवृक्ष की भांति है, जिसकी जड़ें पूर्वजों के आशीर्वाद से सिंचित हैं। इस वृक्ष के तने में दादाजी का मार्गदर्शन और पिता का त्याग समाहित है, तो उसकी छाया में माँ का अनुपम स्नेह और करुणा हमें जीवन की दिशा देते हैं। विशेषकर माँ का उपकार तो अनुपम है–जिसने नौ महीने गर्भ में धारण कर अपनी आँखों के नीर से हमें सींचा, जन्म देकर जीवन का उपहार दिया और फिर अथक परिश्रम व ममता से हमें बड़ा किया। ऐसे उपकारों का कोई प्रतिदान संभव नहीं है।

पूर्वजों और मातृ-पितृ ऋण से हम कभी मुक्त नहीं हो सकते, किंतु उनका स्मरण और श्रद्धा ही उनके प्रति सच्चा सम्मान है। श्राद्ध पक्ष हमें वही पावन अवसर प्रदान करता है, जब हम अपने पूर्वजों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर उनके उपकारों का स्मरण करते हैं। यह केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवन में कृतज्ञता, विनम्रता और आत्मीयता को जागृत करने का मार्ग है।

कर्मकांड का गहरा सार

पितृपक्ष से जुड़े कई कर्मकांड हैं, जैसे पिंडदान और तर्पण। ये कर्मकांड ऊपरी तौर पर भले ही परंपरा लगें, पर इनका गहरा अर्थ है।

पिंडदान- गरुड़ पुराण के अनुसार, आत्मा के विसर्जन के दसवें दिन पिंडदान किया जाता है। चावल या आटे के पिंड बनाकर बहते जल में अर्पित किए जाते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं है, बल्कि यह जीवन के निरंतर प्रवाह का प्रतीक है।

जिस प्रकार पिंड जल में मिलकर विलीन हो जाते हैं, उसी प्रकार शरीर पंचतत्वों में विलीन होकर नई ऊर्जा में रूपांतरित होता है। यह इस बात का प्रतीक है कि जीवन कभी नष्ट नहीं होता, बल्कि सिर्फ रूप बदलता है।

तर्पण- तर्पण का अर्थ है जल अर्पित करना। यह पितरों को जल अर्पित करके उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का एक तरीका है। यह दर्शाता है कि जिस प्रकार जल जीवन के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार हमारे पूर्वजों का योगदान हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

पितृ ऋण और सामाजिक दायित्व

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, मनुष्य जीवन में तीन ऋणों से बंधा है–देव ऋण, गुरु ऋण और पितृ ऋण। इनमें से पितृ ऋण की कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए ही श्राद्ध मनाया जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपने पूर्वजों का कर्ज चुका रहे हैं, बल्कि यह उनके प्रति हमारे सम्मान और आभार को दर्शाने का एक माध्यम है।

यह केवल पितरों की स्मृति का अवसर ही नहीं है, बल्कि यह समाज, परिजनों, मित्रों, ब्राह्मणों और यहाँ तक कि पक्षियों व प्राणियों के प्रति दान-पुण्य कर कृतज्ञता जताने का भी उत्सव है। उदाहरण के लिए, श्राद्ध के दिन कौवों को भोजन खिलाना एक महत्वपूर्ण रस्म है। यह मान्यता है कि कौवे पितरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह क्रिया हमें यह सिखाती है कि हमारे पूर्वज न केवल हमारे परिवार का, बल्कि प्रकृति और समाज का भी अभिन्न अंग थे। इस तरह, श्राद्ध हमें मानवीय और प्राकृतिक संबंधों के प्रति संवेदनशील बनाता है।

शोक से उत्सव की ओर

यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि पितृपक्ष के बाद ही भारत के सबसे बड़े त्योहारों, जैसे नवरात्रि और दीपावली का क्रम शुरू होता है। यह एक प्रतीकात्मक संदेश देता है कि पितृपक्ष शोक का अंत है, जिसके बाद हम नए उत्सवों और खुशियों का स्वागत करते हैं। यह हमें बताता है कि जीवन में दुख और खुशी एक-दूसरे के पूरक हैं। जिस प्रकार रात के बाद सुबह होती है, उसी प्रकार जीवन में एक अध्याय के समाप्त होने के बाद ही एक नया अध्याय शुरू होता है। अतः, पितृपक्ष शोक का नहीं, बल्कि अपने पूर्वजों के गुणों और प्रेरणाओं को याद कर एक नए सकारात्मक जीवन की शुरुआत करने का पर्व है। यह हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है और सिखाता है कि हम अपने जीवन में संतुलन, ज्ञान और कृतज्ञता के साथ आगे बढ़ें।

फिल्टर प्लांट की क्षमता कम होने से नहीं भर पा रहीं टंकियां

एक दिन छोड़कर की जा रही शहर में पेयजल सप्लाई

बैतूल। बारिश के इस मौसम में भी लोगों को एक दिन के अंतराल में पेयजल सप्लाई मिल रही है। जिससे लोगों को पानी के लिए तरसना पड़ रहा है। हालात यह है कि सवा लाख की आबादी वाले बैतूल शहर में लोगों को एक दिन छोड़कर ही पेयजल मिल रहा है। जिसके पीछे नगर पालिका के जिमेदार अधिकारी, फिल्टर प्लांट की क्षमता कम होने और टंकियों को भरने में समय लगने के कारण यह संकट बता रहे है, जबकि गर्मियों में पानी की कमी होने का हवाला देकर नगरपालिका एक दिन के अंतराल में पेयजल सप्लाई कर रही थी, लेकिन अब बारिश में पर्याप्त पानी होने के बाद भी सप्लाई व्यवस्था में बदलाव नहीं किया गया है। बता दे कि शहर की 10 पानी की टंकियों की कुल क्षमता लगभग 72 लाख लीटर है, लेकिन विवेकानंद वार्ड का 12 एमएलडी क्षमता वाला फिल्टर प्लांट इन सभी को एक साथ भरने में नाकाफी साबित हो रहा है।

रोजाना सप्लाई के लिए 80 लाख लीटर पानी की जरूरत- बताया जा रहा है कि शहर को रोजाना पेयजल सप्लाई के लिए करीब 80 लाख लीटर पानी चाहिए, जबकि प्लांट की क्षमता इतनी नहीं है। यही वजह है कि नगर पालिका को मजबूरी में एक दिन छोड़कर ही पानी सप्लाई करना पड़ रहा है। ऐसे में जागरूक नागरिको का कहना है कि प्लांट की क्षमता बढ़ाने के लिए नगरपालिका को कोई ठोस कदम उठाने चाहिए। लेकिन नगरपालिका ध्यान नहीं दे रही है। ऊपर से छह माह पहले जो पानी टंकी बनकर तैयार हो गई है, उसे अब तक सप्लाई लाइन नहीं जोड़ा गया है। अगर फिल्टर प्लांट की क्षमता नहीं बढ़ाई गई तो आने वाले समय में बैतूल की जनता को और भी भीषण पेयजल संकट का सामना करना पड़ेगा।

कोठीबाजार टंकी छह माह से बंद- कोठीबाजार में 10 लाख लीटर क्षमता की नई टंकी का निर्माण छह माह पहले ही पूरा हो गया था, लेकिन इसे अब तक शुरू नहीं किया जा सका है। जबकि नगर पालिका नई टंकियों का निर्माण करवा रही है। नगर पालिका का कहना है कि टंकी खाली रहने पर क्रेक आने का डर है, इसलिए इसे आधा पानी भरकर ही रखा गया है। चौंकाने वाली बात यह है कि अब तक इसे मुख्य सप्लाई लाइन से जोड़ा नहीं गया है। जिसकी वजह से इस टंकी से वार्डों में पेयजल सप्लाई अभी तक शुरू नहीं की जा सकी है और बारिश में भी शहर को एक दिन छोड़कर पानी सप्लाई करना नगर पालिका की मजबूरी बन गई है।

दो टंकियों का निर्माण जारी, दो जमीनी विवाद में फंसी

नगर पालिका ने अमृत 2.0 योजना के तहत शहर में चार नई टंकियों का निर्माण शुरू किया है। इनमें से दो पर काम जारी है, जबकि दो टंकियों के निर्माण में जमीन विवाद के कारण काम शुरू ही नहीं हो पाया है। अधिकारियों का दावा है कि इन टंकियों के बन जाने पर शहर की स्टोरेज क्षमता 35 लाख लीटर और बढ़ जाएगी और यह एक करोड़ लीटर से ऊपर पहुंच जाएगी। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि फिल्टर प्लांट की क्षमता 12 एमएलडी से बढ़ाकर कम से कम 24 एमएलडी नहीं की गई तो नई टंकियां भी बेकार साबित होंगी। जिनका लाभ नहीं मिलेगा।

इनका कहना है -

फिल्टर प्लांट की क्षमता कम होने से सभी टंकियों को रोज भर पाना मुश्किल है। हम एक दिन छोडकर पानी सप्लाई कर रहे हैं। कोठीबाजार टंकी को मुय सप्लाई लाइन से जोडना बाकी है, इसलिए इसे शुरू नहीं किया जा सका है।

-धीरेंद्र राठौर,
जल शाखा प्रभारी नगर पालिका बैतूल

स्वास्थ्य कर्मचारियों ने किया सार्थक ऐप का विरोध

बैठक में संयुक्त स्वास्थ्य अधिकारी कर्मचारी संघ का किया गठन

बैतूल। सार्थक ऐप के विरोध में संयुक्त स्वास्थ्य अधिकारी कर्मचारी संघ का गठन किया गया जिसमें जिले के कई संगठनों ने मिलकर भागीदारी की। इस संघ में अजाक्स बैतूल, राज्य कर्मचारी संघ, भारतीय मजदूर संघ, लिपिक कर्मचारी संघ, डॉक्टर एसोसिएशन संघ, न्यू बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कर्मचारी संघ, संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी संघ, स्टेट फार्मासिस्ट संघ, मध्य प्रदेश लैब टेक्नीशियन संघ, नर्सिंग ऑफिसर एसोसिएशन संघ एवं एक्सरे टेक्नीशियन संघ शामिल रहे। बैठक में उपस्थित सभी संगठनों के पदाधिकारियों ने स्वास्थ्य विभाग में लागू किए जा रहे सार्थक ऐप का पुरजोर विरोध किया। पदाधिकारियों ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग का अमला दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में सेवाएं देता है, लेकिन कई ग्रामों में मोबाइल नेटवर्क की अनुपलब्धता के कारण सार्थक ऐप से उपस्थिति दर्ज कराना संभव नहीं होता। इससे कर्मचारी अपने कर्तव्य पर उपस्थित होने के बावजूद अनुपस्थित दर्शाए जाएंगे। इसके अलावा ऐप से उपस्थिति दर्ज करने में काफी समय लगता है। विशेष रूप से मैदानी अमले की महिला कर्मचारियों के लिए यह व्यवस्था और भी परेशानी का कारण बनेगी। जिनकी पदस्थापना स्थल 10 से 15 किलोमीटर तक फैला होता है, उन्हें पहले मुख्यालय पर उपस्थित होकर उपस्थिति दर्ज करनी होगी, उसके बाद फील्ड में जाकर सेवा देना होगी और फिर पुन: मुख्यालय आकर उपस्थिति दर्ज करानी होगी। इस पूरी जटिल प्रक्रिया से स्वास्थ्य सेवाओं पर नकारात्मक असर पडने की आशंका जताई गई।

11 सितंबर को सौंपेंगे ज्ञापन- बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि यदि कर्मचारी बिना मानसिक तनाव के अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे, तभी बैतूल जैसे आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं स्थापित हो पाएंगी। अंत में यह तय किया गया कि सार्थक ऐप को लागू न करने की मांग को लेकर 11 सितंबर, दिन गुरुवार शाम 4:30 बजे ज्ञापन कलेक्टर एवं सीएमएचओ के माध्यम से मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव स्वास्थ्य विभाग, मध्य प्रदेश शासन भोपाल को सौंपा जाएगा। इस अवसर पर प्रमुख रूप से डॉक्टर रुपेश पद्माकर, डॉक्टर रानू वर्मा, सुरेंद्र धाकड़, अनिल कापसे, प्रकाश माकोड़े, संजय ठाकुर, धर्मेंद्र भूमरकर, हेमेंद्र वर्मा, एसआर दीक्षित, योगेंद्र दवंडे, रामेंद्र मालवी, अनिल देशमुख, संजीव बोखड़े, मनीष श्रीवास, जीडी बरडे, धर्मराज परमार, राकेश सोनी, अनिल नागले, तुकाराम ठाकरे, रमेश खाडे, एमपी तिवारी और श्रीराम बोरकर उपस्थित रहे।

बरेठा घाट पर ट्रक का टायर फटा, लगा लंबा जाम

बैतूल। नागपुर-भोपाल फोरलेन हाईवे पर बरेठा घाट स्थित पुलिया के बीच अचानक ट्रक का टायर फट गया। जिससे पुलिया पर ट्रक फंस गया और हाईवे पर दोनों ओर करीब दो घंटे से लंबा जाम लगा रहा। जाम में सैकड़ों वाहन फंसे रहे और लोग घंटों से परेशानियों का सामना

करना पड़ा। पुलिया पर ट्रक का टायर बदलने में दिक्कत आने से जाम की स्थिति और ज्यादा गंभीर हो गई। वाहन चालकों का कहना है कि बरेठा घाट पर बड़े-बड़े गड्ढे बने हुए हैं, जिनकी वजह से आए दिन टायर फटने और हादसों की घटनाएं हो रही हैं। इसके बावजूद विभाग इन गड्ढों की मरम्मत को लेकर कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रहा है। इसी वजह से आए दिन जाम की स्थिति बन रही है और लोगों को घंटों परेशान होना पड़ता है।

जयपुर एक्सप्रेस ट्रेन से गिरा युवक, अस्पताल में भर्ती

बैतूल। बैतूल रेलवे स्टेशन पर सोमवार को जयपुर एक्सप्रेस से उतरते समय 22 वर्षीय हनीफ खान गंभीर रूप से घायल हो गए। वह इटारसी के रहने वाले हैं और कटनी से बैतूल आ रहे थे। जानकारी के अनुसार ट्रेन जैसे ही बैतूल स्टेशन पर आई, हनीफ जल्दी में उतरने लगे। उतरते वक्त उनका संतुलन बिगड़ा और वे नीचे गिर गए। ट्रेन धीमी चल रही थी, पर गिरने से उन्हें सिर और शरीर के

कई हिस्सों पर चोटें आईं। घटना होते ही स्टेशन पर खड़े लोगों ने मदद की और जीआरपी को सूचना दी। मौके पर पहुंची जीआरपी ने 108 एंबुलेंस बुलवाई। एंबुलेंस से हनीफ को तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में हनीफ को सर्जिकल वार्ड में भर्ती किया गया है। डॉक्टरों की टीम उनका इलाज कर रही है और उनकी स्थिति का निरीक्षण कर रही है। स्थानीय पुलिस ने भी घटना स्थल का जायजा लिया और यात्रियों से पूछताछ की। पुलिस ने यात्रियों से अपील की है कि ट्रेन रुकने पर ही सावधानी से उतरें। चलती ट्रेन से उतरने की कोशिश न करें और प्लेटफॉर्म पर स्टाफ के निर्देशों का पालन करें ताकि ऐसे हादसे टाले जा सकें।

फसल क्षति, मकान क्षति और सर्पदंश में राहत राशि दिए जाने के कोई भी प्रकरण लंबित न रहें: कलेक्टर

लापरवाही पर तहसील कार्यालयों के लिपिकों के विरुद्ध कार्यवाही

बैतूल। सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का संतुष्टि पूर्वक निराकरण सुनिश्चित कराएं। 50 दिवस से अधिक की लंबित शिकायतों का भी प्राथमिकता से निराकरण किया जाएं। यह निर्देश सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित समयसीमा की बैठक में कलेक्टर बैतूल नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने सभी जिला अधिकारियों को दिए। उन्होंने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों की विभागवार समीक्षा की। उन्होंने 50 दिवस से अधिक की शिकायतों के निराकरण में संतोषजनक प्रगति नहीं होने पर सभी तहसील कार्यालय के शिकायत शाखा के लिपिकों की एक - एक वेतन वृद्धि रोके जाने का नोटिस देने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी एसडीएम और तहसीलदारों को सख्त निर्देशित किया कि लंबित शिकायतों का त्वरित निराकरण कराएं। उन्होंने सभी जिला अधिकारियों को भी किया ताकीद किया कि अपने अधीनस्थ ब्लॉक स्तर के अधिकारियों कर्मचारियों की सतत मॉनिटरिंग कर शिकायतों का संतुष्टि पूर्वक निराकरण कराएं। उन्होंने सभी एसडीएम और तहसीलदारों को न्यायालयीन प्रकरणों में पूरी गंभीरता से जवाब दावे प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि न्यायालयीन प्रकरणों में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बैठक में फसल क्षति, मकान क्षति और सर्पदंश में राहत राशि के प्रकरणों की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि राहत राशि दिए जाने का कोई भी प्रकरण लंबित न रहें। सभी प्रकरणों का पूरी तत्परता से निराकरण किया जाएं। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने नरवाई प्रबंधन की तैयारी की भी जानकारी लीं। उन्होंने कहा कि जिले में अधिकांश प्रकरण जंगल में आग लगने के होते हैं। सभी वनमण्डल के अनुविभागीय अधिकारी जंगल की आग पर प्रभावी अंकुश लगाएं। सुनिश्चित करें कि जंगल में आग लगने की घटना न हो।उन्होंने उपसंचालक कृषि को भी निर्देशित किया कि नरवाई प्रबंधन की विकासखंडवार कार्य योजना बनाएं। नरवाई न जलाने के लिए विशेष जनजागृति अभियान चलाए। जिसमें नरवाई जलाने के नुकसान, नरवाई प्रबंधन के लिए सहायक कृषि उपकरण और नरवाई जलाने पर जुर्माना इत्यादि की जानकारी ग्रामीणों को दी जाए। पटवारी, सचिव और कृषि विभाग के एसीटीओ के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाया जाएं।

बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबल योजना में अपील के लंबित प्रकरणों की सभी जनपद सीईओ और सीएमओ से जानकारी ली। उन्होंने सभी एसडीएम को निर्देशित किया कि अपील प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण कराएं। उन्होंने सभी प्राचार्य आईटीआई को अपनी संस्था के रिक्त पदों पर शत प्रतिशत प्रवेश कराएं जाने के निर्देश दिए। उद्यानिकी विभाग अंतर्गत संचालित पीएफएमई योजना की प्रगति की भी कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जानकारी ली। उन्होंने उप संचालक उद्यानिकी और जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक को योजना के प्रकरण शीघ्र स्वीकृत और वितरित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी एसडीएम को भी अपने क्षेत्र में सभी उद्यानिकी फसलों की गिरदावरी सुनिश्चित कराने के लिए निर्देशित किया। बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अक्षत जैन, अपर कलेक्टर श्रीमती वंदना जाट सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहें।

चिचोली में जिला स्तरीय रोजगार मेला 12 सितंबर को

बैतूल। जिला रोजगार कार्यालय, आईटीआई, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र बैतूल के संयुक्त तत्वावधान में युवा संगम के तहत जिला स्तरीय रोजगार, स्वरोजगार एवं अप्रेन्टिसशिप मेला 12 सितम्बर को प्रात:11 से 4 बजे तक शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था चिचोली के समीप नगरपालिका ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि रोजगार मेले में 12 प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा विभिन्न पदों पर अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। उन्होंने सभी युवाओं से रोजगार मेले का लाभ लेने की अपील की है। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया कि नगर पालिका चिचोली के ऑडिटोरियम में आयोजित रोजगार मेले में वर्धमान फैब्रिक्स प्राइवेट लिमिटेड बुदनी में मशीन ऑपरेटर के 150 पदों के लिए, कुलोदय टेक्नोपैक प्राइवेट लिमिटेड दमन गुजरात में 100 पदों तथा यशस्वी ग्रुप भोपाल में अप्रेंटिस के 50 पदों के लिए योग्यता 8वीं, 10वीं, 12वीं, आईटीआई उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। जेके बायो एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड भोपाल में सेल्स एग्जीक्यूटिव के 20 पद, पुखराज हेल्थ केयर प्राइवेट लिमिटेड भोपाल में मैनेजर के 100 पदों तथा अकाजा फैशन हब बैतूल में सेल्स एग्जीक्यूटिव के 20 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, स्नातक उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। इसी प्रकार सीआईआई कौशल प्रशिक्षण केंद्र छिंदवाड़ा में मोटर मैकेनिकल के 25 पद तथा डीएंडके करियर सेंटर छिंदवाड़ा में मशीन ऑपरेटर के 50 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, आईटीआई होना आवश्यक है। शक्ति मोटर्स मुलतापी प्राइवेट लिमिटेड मुलताई में सेल्स एग्जीक्यूटिव, सेल्स मैनेजर, मैकेनिक हेल्पर के 25 पदों के लिए योग्यता 8वीं से स्नातकोत्तर, आईटीआई डिप्लोमा होना अनिवार्य है। मेधावी एस्पायर प्राइवेट लिमिटेड पुणे में उत्पादन एवं गुणवत्ता के 100 पदों के लिए योग्यता 10वीं, 12वीं, स्नातक आईटीआई होना जरूरी है। इसी प्रकार टीवीएस ट्रेनिंग एंड सर्विसेज लिमिटेड साउथ में मशीन ऑपरेटर के 50 पदों के लिए योग्यता आईटीआई, डिप्लोमा, बीई तथा जेड प्लस अकादमी नर्मदापुरम व हरदा में मार्केटिंग और काउंसलिंग के 4 पदों के लिए योग्यता ग्रेजुएट होना आवश्यक है।

सांभर का शिकार करने वाले आरोपी गिरफ्तार, पका हुआ मांस बरामद

बैतूल में 3 और आरोपी पकड़े, दो पहले हो चुके गिरफ्तार

बैतूल। जिले के खमालपुर और चिखली पाझर इलाके में सांभर मांस मामले में वन विभाग ने सोमवार को तीन और आरोपियों को पकड़ा है। गिरफ्तार हुए आरोपियों के नाम लखन कावड़े, धीरू कावड़े और साहबलाल उइके (निवासी पाझर) हैं। सभी को अदालत में पेश किया गया। डिप्टी रेंजर वर्डे ने बताया कि ये आरोपी अब तक फरार थे। इससे पहले 4 सितंबर की रात हरि पिता भैयालाल और कमल पिता छतरू को पकड़ा गया था। उनके पास से करीब 5 किलो पका हुआ सांभर का मांस बरामद हुआ था। पूछताछ में उन्होंने बताया था कि उन्होंने अनकावाड़ी गांव के दो और लोगों के साथ मिलकर रानीपुर परिक्षेत्र के दौड़ीकोल इलाके में ढाई-तीन साल की मादा सांभर का शिकार किया और

कुल्हाड़ी से काटकर मांस बांट लिया। वन विभाग ने सभी आरोपियों पर वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 9, 39, 49बी, 50 और 51 के तहत केस दर्ज किया है। पहले पकड़े गए दो आरोपियों को अदालत ने 5 से 8 सितंबर तक फॉरेस्ट रिमांड पर भेजा था। अब तीन और आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद कुल पांच लोग हिरासत में आ चुके हैं।

शहर में 3 करोड़ की लागत से बन रही वाइट टॉपिंग सडक़, कोर कटिंग कर क्वालिटी टेस्टिंग की गई

सभी मानकों पर खरा उतरा सडक़ निर्माण कार्य, विशेषज्ञों ने बताया गुणवत्तापूर्ण

बैतूल। शहर के लक्ष्मी चौक से नेहरू पार्क चौपाटी तक करीब 3 करोड़ रुपये की लागत से बन रही वाइट टॉपिंग सडक़ निर्माणाधीन है। हाल ही में सडक़ निर्माण की गुणवत्ता को लेकर कुछ समाचार सामने आए थे, जिनमें आरोप लगाया गया था कि निर्माण मानक के अनुरूप नहीं हो रहा है। हालांकि लोक निर्माण विभाग ने इन खबरों को पूरी तरह असत्य बताते हुए स्पष्ट किया है कि सडक़ की गुणवत्ता सभी निर्धारित मानकों पर खरी उतरी है। कार्यपालन यंत्री पीडब्ल्यूडी श्रीमती प्रीति पटेल ने जानकारी दी कि विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कुछ समय पहले लक्ष्मी चौक से नेहरू पार्क चौपाटी तक बनने वाली इस 3 करोड़ की सडक़ का भूमि पूजन किया था। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए थे कि कार्य की गुणवत्ता से कोई समझौता न हो और समय-समय पर इसकी निगरानी की जाए। विधायक श्री खंडेलवाल ने आमजन की समस्या और सडक़ की उपयोगिता को देखते हुए निर्माण एजेंसी को जांच के निर्देश दिए थे। इसी के पालन में एजेंसी ने निर्माणाधीन सडक़ से कोर काटकर सैंपल लिए

और उन्हें प्रयोगशाला में जांच के लिए भेजा गया। रिपोर्ट में सडक़ की गुणवत्ता पूरी तरह सही पाई गई। उन्होंने बताया कि वाइट टॉपिंग सडक़ का निर्माण पीडब्ल्यूडी की निगरानी में किया जा रहा है। समय-समय पर इंदौर और दिल्ली से आए टेक्नोलॉजी विशेषज्ञ भी निर्माण का निरीक्षण कर रहे हैं। विशेषज्ञों ने निर्माण कार्य को उच्च गुणवत्ता का बताया और कार्य की सराहना की।

क्या है वाइट टॉपिंग सडक़- वाइट टॉपिंग तकनीक के तहत पहले से बनी डामर सडक़ को उखाडक़र उस पर कंक्रीट की परत डाली जाती है। इसकी लागत सामान्य कंक्रीट सडक़ की तुलना में कम आती है, क्योंकि इसमें अतिरिक्त लेयर बनाने की आवश्यकता नहीं होती। वाइट टॉपिंग सडक़ की मजबूती लगभग 40ङ्क50 वर्ष तक बनी रहती है। निर्माण के दौरान कंक्रीट डालने के एक दिन बाद ही जॉइंट काट दिए जाते हैं, जिससे सडक़ में दरारें न पड़ें।

जेएच कॉलेज में बांस कला प्रशिक्षण का किया शुभारंभ

बैतूल। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस जयवंती हॉक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा अल्पावधि रोजगारोन्मुखी, स्व रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण के अंतर्गत बांस कला प्रशिक्षण का शुभारंभ सोमवार को किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रभारी प्राचार्य डॉ. अनिता सोनी ने बांस कला की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। विभागाध्यक्ष वाणिज्य डॉ. राजेश शेषकर ने प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करते हुए बांस कला के क्षेत्र में रोजगार के अवसर पर अपने

विचार व्यक्त किए। बांस कला प्रशिक्षक ललित सोनी विश्वकर्मा अवॉर्ड से सम्मानित के द्वारा विद्यार्थियों को बांस की वस्तुओं के निर्माण से संबंधित प्रशिक्षण की रूपरेखा साझा की। उक्त कार्यक्रम ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफिसर डॉ. ऋषिकान्त पंथी के संयोजन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लोकेश नरवरे द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. स्वाति लोखंडे, डॉ. अरुणा धांडोले, डॉ. शिवदयाल साहू, प्रो. कीर्ति वराठे, डॉ. शारदा कौशिक, डॉ. छाया शाक्य, सुश्री गायत्री यादव, अनिल आठोले एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

संक्षिप्त समाचार

राजस्व की टीम ने गंभीर के किनारे के गांवों में फसलों की नुकसानी का किया सर्वे

उज्जैन। बारिश के चलते नदी-नाले उफान पर है7 जिले में शहरों की बनिस्बत अंचल में हालात ज्यादा मुश्किल भरे हैं। खेतों में खड़ी सोयाबीन की फसलें बारिश से प्रभावित होने से किसानों को नुकसान झेलना पड़ रहा है। इस नुकसानी की भरपाई के लिए प्रशासन के निर्देश पर राजस्व, कृषि व बीमा कंपनी के अधिकारियों की संयुक्त टीम ने रविवार को गंभीर के किनारे वाले गांवों में सोयाबीन की फसल का सर्वे कर नुकसानी का आंकलन कर रिपोर्ट तैयार की। तहसीलदार आलोक चौरे ने बताया बामोरा, भेरूपुरा, अचलाना, कंडारिया, नलवा, खरेट व टकवासा आदि गांवों में सर्वे किया है। इसके अलावा भी कई निचले खेतों में भी पानी से सोयाबीन की फसल खराब हो रही है।

देवास की 94 वर्षीय रेशमबाई का निधन, 90 साल की उम्र में सीखा था कार चलाना; खुद मंदिर और बाजार ड्राइव कर जाती थीं

देवास। देवास जिले की बिलावली निवासी रेशम बाई तंवर का 94 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। रेशमबाई अपनी अनोखी जीवन शैली के लिए जानी जाती थीं। उन्होंने 90 वर्ष की उम्र में कार चलाना सीखा था। रेशमबाई का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इस वीडियो में वे देवास हाईवे पर कार चलाती नजर आई थीं। उनकी इस अद्भुत क्षमता की तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी सराहना की थी। उनके पोते डॉक्टर रितेश तंवर ने बताया कि दादी खुद कार चलाकर मंदिर जाती थीं। साथ ही सब्जी खरीदने भी जाती थीं। उनके शौक को देखते हुए ही परिवार ने उन्हें कार चलाना सिखाया था(रेशमबाई 30 सदस्यों के परिवार के साथ बिलावली में रहती थीं। शनिवार देर रात उन्होंने अंतिम सांस ली।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के अंतर्गत उज्जैन से रामेश्वरम के लिए यात्रा रवाना हुई

उज्जैन। मुख्यमंत्री तीर्थदर्शन योजना के अंतर्गत रविवार को उज्जैन रेल्वे स्टेशन से रामेश्वरम के लिए विशेष ट्रेन के माध्यम से तीर्थ यात्रा रवाना हुई। इसमें उज्जैन जिले के 179 तीर्थ यात्री रामेश्वरम दर्शन के लिए पर्यटक ट्रेन से रवाना हुए। यात्रा के निकलने के पूर्व प्लेटफार्म पर तीर्थ यात्रियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव ने इसमें सभी तीर्थयात्रियों को पुष्पमाला भेंटकर सम्मानित किया और मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं दीं। तीर्थ यात्रा पर जाने वाले सभी यात्रियों ने अपना हर्ष व्यक्त किया और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तथा जिला प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया। तीर्थ यात्रियों के साथ अनुरक्षक भी भेजे गए । यात्रा की वापसी 12 सितंबर को होगी।

नेत्रदान पखवाड़े के तहत जागरूकता रैली संपन्न

खण्डवा। राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा 25 अगस्त से 8 सितंबर 2025 तक नेत्र रोग विभाग के तत्वाधान में मनाया जा रहा है। इसी क्रम में शनिवार को शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय सह जिला चिकित्सालय खंडवा में डीन डॉ. संजय कुमार दादू और सिविल सर्जन डॉ. अनिरुद्ध कौशल के मार्गदर्शन में मेडिकल कॉलेज के छात्र छात्राओं, नर्सिंग ऑफिसर एवं पैरा मेडिकल स्टाफ द्वारा जन जागरूकता रैली आयोजित कर नागरिकों को नेत्रदान के लिए जागरूक और प्रेरित किया गया। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. चांदनी करोले एवं डॉ. मनोज बालके द्वारा इस अवसर पर नागरिकों को बताया गया कि राष्ट्रीय दृष्टिहीनता नियंत्रण कार्यक्रम के तहत प्रतिवर्ष 25 अगस्त से 8 सितंबर तक नेत्रदान पखवाड़ा मनाया जाता है। उन्होंने नागरिकों को समझाया कि नेत्रदान महादान है, हमें अपने परिवार, समाज एवं अन्य लोगों को इस पुनीत कार्य के लिए आगे आने हेतु जागरूक करना चाहिए। नेत्रदान पखवाड़े का उद्देश्य लोगों में नेत्रदान के प्रति जनजागरुकता लाना है।

लाखों की संख्या में श्री गणेश प्रतिमाओं का हुआ विसर्जन

इन्दौर (निप्र)। शहर में गणेश उत्सव के समापन अवसर पर नगर निगम इंदौर द्वारा अत्यंत श्रद्धा और परंपरा के साथ श्री गणेश प्रतिमाओं का पूजन एवं विसर्जन किया गया। महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव एवं आयुक्त श्री शिवम वर्मा के नेतृत्व में शहर के 105 निर्धारित स्थानों से 190 गाड़ियों के माध्यम से श्री गणेश प्रतिमाओं का संकलन किया गया।

इन प्रतिमाओं का विसर्जन पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए नवीन तकनीक के माध्यम से जवाहर टेकरी गिट्टी खदान स्थित एकत्रित वर्षाजल में विधिवत पूजन के पश्चात सम्पन्न किया गया। इस प्रक्रिया में आधुनिक क्रेशर मशीन, कन्वेयर बेल्ट, क्रेन तथा 10 हाइड्रोलिक मशीनों का उपयोग किया गया। साथ ही 200 से अधिक मजदूरों वर्कशॉप का समस्त स्टॉफ, समस्त जोनल अधिकारी, समस्त जोनल कार्यालय के उपयंत्री एवं फील्ड का स्टाफ द्वारा इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

नगर निगम इंदौर द्वारा यह व्यवस्था सुनिश्चित की गई कि श्री गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन न केवल धार्मिक परंपराओं के अनुरूप हो, बल्कि पर्यावरण संतुलन एवं स्वच्छता को भी दृष्टिगत रखा जाए।

इस अवसर पर श्री गणेश उत्सव समिति एवं महापौर परिषद सदस्य श्री नंदकिशोर पहाड़िया, अपर आयुक्त श्री अभय राजनगांवकर, श्री मनोज पाठक, अधीक्षण यंत्री श्री डी.आर. लोधी, वर्कशॉप प्रभारी श्री मनीष पांडे, नगर शिल्पज्ञ श्री विवेश जैन सहित नगर निगम के अन्य अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव एवं आयुक्त श्री शिवम वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि इंदौर नगर निगम सदैव यह प्रयास करता है कि धार्मिक उत्सवों का आयोजन जनभावनाओं के अनुरूप हो तथा साथ ही पर्यावरण और स्वच्छता का संतुलन भी कायम रहे। श्री गणेश प्रतिमाओं के विधिवत विसर्जन हेतु की गई यह व्यवस्था शहर की परंपरा, आस्था और आधुनिक तकनीक का अद्वितीय संगम है।

आदि कर्मयोगी अभियान में महू ब्लॉक के 52 और इंदौर ब्लॉक के 4 गांव शामिल

इन्दौर (निप्र)। जनजाति समुदाय के उत्थान और उनके सर्वांगीण विकास के लिए केंद्र सरकार द्वारा महत्वाकांक्षी आदि कर्मयोगी अभियान प्रारम्भ किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत कलेक्टर श्री आशीष सिंह के मार्गदर्शन में तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सिद्धार्थ जैन की उपस्थिति व निर्देशन में विगत 2 से 4 सितम्बर तक कल्याणम रिजॉर्ट महू में 10 ब्लॉक मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

इस अभियान में इंदौर जिले के 56 गांव को चिन्हित किया गया है जिसमें 52 ग्राम महू ब्लॉक के तथा 4 ग्राम इंदौर ब्लॉक के लिए गए है। उक्त 10 ब्लॉक मास्टर ट्रेनर द्वारा लाइन डिपार्टमेंट के विकासखंड स्तरीय अधिकारी, क्लस्टर प्रभारीयों एवं कर्मचारियों को 8 एवं 9 सितम्बर को इंदौर जिला पंचायत सभागृह में एवं 10 व 11 सितंबर 2025 को एसडीएम कार्यालय महू में आयोजित ब्लॉक स्तरीय प्रोसेस लैब में प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके पश्चात विकासखंड स्तरीय अधिकारी अपने विभाग के विभागीय अमले , ग्रामीणजनों, समाजसेवकों, शिक्षित युवाओं तथा सिविल सेवा संगठन के जनजातीय क्षेत्रों में कार्यरत युवाओं के साथ-साथ ग्रामों में एक दिवसीय विलेज लेवल ओरियंटेशन आयोजित कर सभाएं की जाएगी। साथ ही ट्रांजिट वॉक कर डाटा संकलन तथा ग्राम स्तर कार्य योजना तैयार करने का कार्य 30 सितम्बर 2025 तक पूर्ण कर 2 अक्टूबर 2025 की ग्राम सभा में उक्त कार्य योजना का अनुमोदन कर शासन को भेजेंगे।

वृहद स्वास्थ्य शिविर संपन्न

धार (निप्र)। आयुक्त दीपक सिंह की पहल और कलेक्टर प्रियंक मिश्रा के मार्गदर्शन में आज बाग विकासखंड के ग्राम टांडा में संभाग स्तरीय बृहद स्वास्थ्य शिविर का सफल आयोजन संपन्न हुआ। यह शिविर बाग-राजगढ़ रोड स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र टांडा एवं शासकीय उत्कृष्ट बालक विद्यालय टांडा में आयोजित किया गया। इस स्वास्थ्य शिविर में मेडिकल कॉलेज इंदौर, इंडेक्स मेडिकल कॉलेज, अरविंदो मेडिकल कॉलेज इंदौर, सीएचएल अस्पताल इंदौर, गुजरात के धीरज हॉस्पिटल एवं बड़वानी के निजी चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ-साथ धार जिले की स्वास्थ्य टीम ने संयुक्त रूप से अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

शिविर में कुल 4,233 मरीजों का समग्र उपचार किया गया। इनमें से 536 मरीजों की सोनोग्राफी, 265 मरीजों का नेत्र परीक्षण, तथा 12 कैंसर से पीड़ित मरीजों का विशेष परीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त 72 मरीजों के दांतों का उपचार, 191 मरीजों के चर्म रोग का परीक्षण, 84 मरीजों का नाक- कान-गला परीक्षण, 239 सिकल सेल स्क्रीनिंग, 7 मनोरोग के मरीजों की जांच, 154 शिशु रोग का परीक्षण, 136 हृदय रोग जांच, 30 ईको परीक्षण, 842 आयुष विभाग के मरीजों का उपचार किया गया। शिविर में 186 आयुष्मान कार्ड बनाए गए और 12 लोगों ने रक्तदान कर मानवता की मिसाल प्रस्तुत की। साथ ही 81 मरीजों का एक्स-रे परीक्षण भी किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न बीमारियों से ग्रसित 981 मरीजों का परीक्षण एवं उपचार किया गया।

यह शिविर जनपद पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। सरदार सिंह मेड़ा ने बताया कि इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भविष्य में भी नियमित रूप से किया जाएगा ताकि गरीब और आम जनता को स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिल सके।

जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व विशाल धाकड़ ने शिविर स्थल का निरीक्षण किया और सफलतापूर्वक शिविर संपन्न होने पर सभी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों और स्वास्थ्य विभाग की टीम को धन्यवाद प्रेषित किया। सीएमएचओ डॉ. आर. के. शिदे ने उपस्थित लोगों को प्रेरित किया कि समय-समय पर रक्तदान अवश्य करें ताकि जरूरतमंदों को आवश्यक समय पर रक्त प्रदान करके उनकी जान बचाई जा सके।

शिविर में चिकित्सा अधिकारी मनावर डॉ. संजय कुमार मुवेल, खंड चिकित्सा अधिकारी कुक्षी डॉ. अभिषेक रावत, खंड चिकित्सा अधिकारी निसरपुर जितेंद्र दूधी, खंड चिकित्सा अधिकारी गंधवानी डॉ. बलवीर सिंह मंडलोई, डीपीएम वीरेंद्र सिंह रघुवंशी, डीसीएम मुकेश मालवीय एवं जिले के समस्त विकासखंडों के अन्य कर्मचारियों ने सराहनीय योगदान दिया। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. विरभद्र मुवेल, मेडिकल ऑफिसर डॉ. नितिन श्रीवास्तव, बीपीएम जीतेन्द्र रावत व फार्मासिस्ट रंजना बघेल ने शिविर को सफलता पूर्वक संपन्न कराने के लिए सभी का हृदय से धन्यवाद प्रेषित किया।

माता-पिता और बुजुर्गों को तीर्थ दर्शन कराना सबसे बड़ा पुण्य का कार्य - मंत्री श्री सिलावट

इन्दौर (निप्र)। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन यात्रा योजना के तहत आज 200 बुजुर्ग तीर्थ यात्रियों का जत्था रामेश्वरम के लिए रवाना हुआ। जल संसाधन मंत्री श्री तुलसीराम सिलावट ने इन यात्रियों का स्वागत कर यात्रा के लिए रवाना किया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के वरिष्ठ नागरिकों को मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के माध्यम से धार्मिक स्थलों की मुफ्त यात्रा कराती है। इस योजना के तहत 60 वर्ष की आयु से ऊपर के वरिष्ठ नागरिकों को पवित्र स्थानों वाराणसी, रामेश्वरम, मथुरा, वृन्दावन, अमृतसर, वैष्णोदेवी आदि के दर्शन कराने के लिए शुरू की गई, जिसका पूरा खर्च राज्य सरकार करती है। इसका मुख्य उद्देश्य राज्य के वरिष्ठ नागरिकों को उनके जीवनकाल में कम से कम एक बार धार्मिक स्थलों का दर्शन कराना है। इस योजना से गरीब-धर्मप्रेमियों को लाभ हो रहा है।

मंत्री श्री सिलावट ने बताया कि सांवेर के 27 यात्रियों सहित इन्दौर जिले की 9 विधानसभाओं के 200 यात्रियों को आज सुबह इन्दौर रेलवे स्टेशन से पुष्प मालाएं पहना कर ÷जय-जय श्री राम÷ की जयघोष कर रामेश्वर की यात्रा पर रवाना किया गया।

विधायक श्रीमति तनवे ने कालमुखी के स्वास्थ्य शिविर की तैयारियों की समीक्षा की

खण्डवा (निप्र)। विधायक श्रीमति कंचन मुकेश तनवे ने आगामी 14 सितंबर को खण्डवा विकासखण्ड के ग्राम कालमुखी में आयोजित होने वाले मेगा स्वास्थ्य शिविर की तैयारियों की समीक्षा की। समीक्षा बैठक में विधायक श्रीमति तनवे ने गुरुवार को कालमुखी में खंड स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर स्वास्थ्य शिविर में अधिक से अधिक मरीजों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से गांव गांव में अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करने एवं चिन्हित मरीजों की लाइन लिस्टिंग करने के निर्देश दिए, ताकि इंदौर के विशेषज्ञ डॉक्टर्स की सेवाएं ग्रामीणजनों को मिल सकें। इस दौरान सहायक कलेक्टर एवं जनपद सी. ई. ओ. डॉ. श्रीकृष्ण सुशीर , अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री बजरंग बहादूर, शिविर नोडल अधिकारी डॉ. रश्मि कौषल, मुख्य खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ.एन.के. सेठिया, कालमुखी सरंपच प्रतिनिधि, तहसीलदार श्री महेश सोलंकी, थाना प्रभारी जी.पी. वर्मा सहित अन्य विभागों के अधिकारी भी मौजूद थे।

बैठक में डॉ. सेठिया ने बताया कि कमिश्नर इन्दौर संभाग श्री दीपक सिंह की पहल पर संभाग के दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में जिला प्रशासन के सहयोग से मेगा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में खंडवा जिले के विकासखण्ड खण्डवा के हायर सेकेण्ड्री स्कूल ग्राम कालमुखी में यह स्वास्थ्य शिविर 14 सितंबर को आयोजित किया जायेगा।

शिविर में दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों को विभिन्न बीमारियों की स्वास्थ्य जांच जिसमें एक्स-रे, ई.सी.जी., ईको, मेमोग्राफी, सोनोग्राफी, पैथोलॉजी जांच, सिकल सेल जैसी बीमारियों की पहचान के लिए उच्च स्तरीय जांच अत्याधुनिक मशीनों से की जाएगी।

साथ ही चिकित्सकीय परामर्श व निःशुल्क दवाई वितरण की सुविधा भी उपलब्ध होगी। शिविर में इंदौर के प्राईवेट एवं मेडिकल कालेज के चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा भी सेवाएं प्रदान की जायेगी, जिसमें इंदौर के अरविन्दो मेडिकल कॉलेज, शकंरा आई अस्पताल बुरहानपुर के आल इज वेल हॉस्पिटल, शासकीय आर्युवेदिक महाविद्यालय तथा मेडिकल कालेज खण्डवा एवं जिला अस्पताल खण्डवा के विशेषज्ञों द्वारा सेवायें दी जायेंगी।

इंदौर की गौरवशाली परम्परा के अनुरूप रातभर निकला नयनाभिराम झांकियाँ और अखाड़ों का कारवां, हुकमचंद मिल की झांकी को मिला प्रथम स्थान

इन्दौर (निप्र)। इंदौर की गौरवशाली परम्परा के रूप में अनन्त चतुर्दशी चल समारोह पूर्ण श्रद्धा, आस्था एवं अपार उत्साह-उमंग और व्यापक जनभागीदारी के साथ सम्पन्न हुआ। नागरिकों ने इस उत्सव के प्रति अपनी सक्रिय सहभागिता निभाते हुये शहर की परम्परा को अपार उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़ाया। रातभर जोश और उल्लास के साथ चल समारोह में निकली नयनाभिराम झाँकियों और अखाड़ों के उत्कृष्ट प्रदर्शन ने हजारों लोगों का मन मोह लिया। जिला प्रशासन द्वारा गठित झाँकी तथा अखाड़ा निर्णायक समितियों द्वारा पुरस्कार के लिये सर्वसम्मति से श्रेष्ठ झाँकियों और अखाड़ों का चयन किया गया। झांकी में हुकमचंद मिल की नरकासुर का वध झांकी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इसी तरह अखाड़ों में छोगालाल उस्ताद व्यायामशाला और चंद्रपाल उस्ताद व्यायामशाला को प्रथम स्थान मिला। इसी तरह महिला वर्ग का प्रथम पुरस्कार श्री रामनाथ गुरू शस्त्रकला व्यायामशाला को दिया गया।

कलेक्टर श्री आशीष सिंह ने चल समारोह सुचारू रूप से सम्पन्न होने पर इंदौर के नागरिकों, व्यवस्थाओं से जुड़े अधिकारियों-कर्मचारियों, झाँकी आयोजकों और अखाड़ों के सदस्यों तथा मीडियाकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

झाँकी निर्णायक समिति द्वारा अनुशंसित निर्णय

प्रथम पुरस्कार- हुकमचंद मिल- (नरकासुर का वध)
द्वितीय पुरस्कार- राजकुमार मिल- (लंका दहन) और मालवा मिल- (भगत के वश में है भगवान)
तृतीय पुरस्कार- कल्याण मिल- (सेना का शौर्य)
विशेष पुरस्कार- स्वदेशी मिल- (महाशिवरात्री पर शिव पूजा) और होप टेक्सटाईल मिल- (गंगा का पृथ्वी पर अवतरण)

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी परम्परा के निर्वहन में दिये जा रहे मिलो के महत्वपूर्ण योगदान के मद्देनजर पुरस्कार चयन में केवल मिलो की झांकियों को ही शामिल किया गया था।

अखाड़ों के पुरस्कार

चल समारोह में अखाड़ों तथा व्यायाम शालाओं के युवाओं द्वारा हैरत अंगेज प्रदर्शन तथा करतब दिखाये गये। शस्त्र कला की विधा को अखाड़ों तथा व्यायामशालाओं के कलाकारों ने इतनी विविधताओं तथा बारीकियों के साथ प्रस्तुत किया कि दर्शक देखते रह गये। निर्णायक समिति ने इस बार दो विधाओं लाठी तथा दो हाथ के पटे वर्ग में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियों के आधार पर अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार के लिये अखाड़ों का चयन किया। अखाड़ा निर्णायक समिति द्वारा इन प्रस्तुतियों की उत्कृष्टता के आधार पर निम्नानुसार निर्णय अनुशंसित किये गये हैं।

लाठी वर्ग

प्रथम- छोगालाल उस्ताद व्यायामशाला
द्वितीय - महावीर व्यायामशाला इतवारिया बाजार
तृतीय- रविदास व्यायामशाला
विशेष - गाजीगुरू व्यायाम शाला तथा अहिरवार चैतन्य व्यायामशाला

दो हाथ के पटे वर्ग

प्रथम - चंद्रपाल उस्ताद व्यायामशाला
द्वितीय - बिंदागुरू व्यायामशाला
तृतीय - बाबूसिंह उस्ताद व्यायामशाला, नादिया नगर
विशेष - देवीदिन गुरू व्यायामशाला तथा हीरालाल उस्ताद व्यायामशाला

महिला वर्ग

प्रथम - श्री रामनाथ गुरू शस्त्रकला व्यायामशाला
द्वितीय - श्री पंचमुखी गुरू अखाड़ा

बालक वर्ग

प्रथम - कार्तिक राजपूत (लोधीपंच व्यायामशाला)
द्वितीय - आदित्य यादव(गुरू मोहन सिंह उस्ताद व्यायामशाला)
तृतीय - दिव्यांश बेलिया (महाबलेश्वर व्यायामशाला)
विशेष - विनय भारती (प्रमोद हार्डिया व्यायामशाला) तथा हितेश सौलंकी (बृजलाल उस्ताद व्यायामशाला)

बालिका वर्ग

प्रथम - परिधि धीमान (धानुक समाज बृजलाल गुरू व्यायामशाला)
द्वितीय - जिया यादव (वीर बलवंत गुरू व्यायामशाला डमरू उस्ताद)
तृतीय - भूमिका यादव (मार्तण्ड राव उस्ताद व्यायामशाला)
विशेष - कनक वर्मा (दास हनुमान व्यायामशाला) तथा लक्ष्मी वैध (छोटू गुरू व्यायामशाला)

एक ही छत के नीचे इंदौर के डॉक्टर्स ने 536 मरीजों की सोनोग्राफी कर दिया उपचार

इंदौर सम्भागायुक्त श्री सिंह की पहल पर दूसरे वर्ष में 5वाँ वृहद स्वास्थ्य शिविर टांडा में हुआ

इन्दौर (निप्र)। इंदौर सम्भागायुक्त श्री दीपक सिंह की पहल पर दूसरे वर्ष का 5वाँ वृहद स्वास्थ्य शिविर का आयोजन रविवार को इंदौर संभाग के धार जिले के टांडा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित हुआ। धार कलेक्टर श्री प्रियंक मिश्रा के मार्गदर्शन में बाग विकासखंड के जनजाति ग्राम टांडा में संभाग स्तरीय वृहद स्वास्थ्य शिविर में मेडिकल कॉलेज इंदौर, इंडेक्स मेडिकल कॉलेज, अरविंदो मेडिकल कॉलेज इंदौर, सीएचएल अस्पताल इंदौर, गुजरात के धीरज हॉस्पिटल एवं बड़वानी के निजी चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ-साथ धार जिले की स्वास्थ्य टीम ने संयुक्त रूप से अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

शिविर में कुल 4,233 मरीजों का समग्र उपचार किया गया। इनमें से 536 मरीजों की सोनोग्राफी, 265 मरीजों का नेत्र परीक्षण तथा 12 कैंसर से पीड़ित मरीजों का विशेष परीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त 72 मरीजों के दांतों का उपचार, 191 मरीजों के चर्म रोग का परीक्षण, 84 मरीजों का नाक- कान-गला परीक्षण, 239 सिकल सेल स्क्रीनिंग, 7 मनोरोग के मरीजों की जांच, 154 शिशु रोग का परीक्षण, 136 हृदय रोग जांच, 30 ईको परीक्षण, 842 आयुष विभाग के मरीजों का उपचार किया गया।

उपचार के साथ ही शासकीय स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ देने के लिए जोड़ा गया: शिविर में स्वास्थ्य जांच और उपचार के अलावा मध्यप्रदेश एवं भारत सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए भी आवश्यक पंजीयन किया गया। इस दौरान 186 आयुष्मान कार्ड बनाए गए और 12 लोगों ने रक्तदान कर मानवता की मिसाल प्रस्तुत की। साथ ही 81 मरीजों का एक्स-रे परीक्षण भी किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न बीमारियों से ग्रसित 981 मरीजों का परीक्षण एवं उपचार किया गया।

यह शिविर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री सरदार सिंह मेड़ा सहित अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। श्री मेड़ा ने बताया कि इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भविष्य में भी नियमित रूप से किया जाएगा ताकि गरीब और आम जनता को स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिल सकें।

जिला पंचायत सीईओ अभिषेक चौधरी एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व विशाल धाकड़ ने शिविर स्थल का निरीक्षण किया और सफलतापूर्वक शिविर संपन्न होने पर सभी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों और स्वास्थ्य विभाग की टीम को धन्यवाद प्रेषित किया। सीएमएचओ डॉ. आर.के. शिंदे ने उपस्थित लोगों को प्रेरित किया कि समय-समय पर रक्तदान अवश्य करें ताकि जरूरतमंदों को आवश्यक समय पर रक्त प्रदान करके उनकी जान बचाई जा सके।

शिविर में चिकित्सा अधिकारी मनावर डॉ. संजय कुमार मुवेल, खंड चिकित्सा अधिकारी कुक्षी डॉ. अभिषेक रावत, खंड चिकित्सा अधिकारी निसरपुर जितेंद्र दूधी, खंड चिकित्सा अधिकारी गंधवानी डॉ. बलवीर सिंह मंडलोई, डीपीएम श्री वीरेंद्र सिंह रघुवंशी, डीसीएम श्री मुकेश मालवीय एवं जिले के समस्त विकासखंडों के अन्य कर्मचारियों ने सराहनीय योगदान दिया।

खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. विरभद्र मुवेल, मेडिकल ऑफिसर डॉ. नितिन श्रीवास्तव, बीपीएम जीतेन्द्र रावत व फार्मासिस्ट रंजना बघेल ने शिविर को सफलता पूर्वक संपन्न कराने के लिए सभी का हृदय से धन्यवाद प्रेषित किया। आभार व्यक्त जिला टीकाकरण अधिकारी धार डॉ. नरेंद्र पवैय्या ने किया।

राइट क्लिक

काश ! ब्राह्मण, 'बोस्टन ब्राह्मणों' की तरह अमीर भी होते...!

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं। संपर्क- 9893699939
ajaybokil@gmail.com

इसे भारत में ब्राह्मणों के हक में सफाई न मानें, लेकिन अमेरिका के मनमौजी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के धूर्त ट्रेड एडवाइजर पीटर नवारो का भारत पर यह आरोप कि 'रूसी तेल से यहां के 'ब्राह्मण' तगड़ी कमाई कर रहे हैं,' न केवल हास्यास्पद, कुटिलतापूर्ण तथा भारत की सामाजिक व्यवस्था की जटिलताओं के प्रति अज्ञानता से भरा है। हाल में अमेरिका में 'फ़ॉक्स न्यूज़ संडे' को दिए एक इंटरव्यू में नवारो ने कहा था कि भारतीय कृपया समझें कि यहाँ क्या हो रहा है। ब्राह्मण, भारतीय लोगों की क़ीमत पर मुनाफ़ा कमा रहे हैं। हमें इसे रोकना होगा।

नवारो के इस 'शरारती बयान' को भारत में सभी राजनीतिक दलों ने सिरे से खारिज कर दिया। भारत सरकार ने इसे 'अनुचित और अव्यावहारिक' बताते हुए कहा कि हम जहां से सस्ता तेल मिलेगा, खरीदेंगे। हम तेल मुनाफे के लिए नहीं अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए खरीदते हैं। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि नवारो का 'ब्राह्मणों की मुनाफ़ाखोरी' वाला बयान अंग्रेजों द्वारा 'फूट डालो और राज करो' की नीति जैसा है। अलबत्ता नवारो को भारत में एक समर्थक जरूर मिला। वो हैं कांग्रेस नेता उदित राज (पूर्व के रामराज)। उन्होने कहा कि मैं नवारो से पूरी तरह सहमत हूं। भारत में निजी भारतीय तेल शोधक ऊंची जाति वालों की हैं और तथाकथित निचली जातियों को तेल शोधक बनने में सदियां लग जाएंगी। यह बात अलग है कि उदित राज के जाति विद्वेष से प्रेरित इस बयान को उनकी ही पार्टी ने तवज्जो नहीं दी।

कहा जा रहा है कि नवारो का यह 'ब्राह्मण ज्ञान' अमेरिकी पत्रकारिता में प्रयुक्त 'बोस्टन ब्राह्मण' संज्ञा से उपजा है। वो सभी भारत में रईसों को 'ब्राह्मण जाति' का समझ बैठे हैं। काश, सच में ऐसा होता..! लेकिन हकीकत इसके लगभग विपरीत है। आज भारत के टॉप 25 कारोबारियों में एक भी ऐसा नहीं है, जो ब्राह्मण जाति से हो। देश में दो ब्राह्मण अमीर इन्फोसिस के मालिक नारायण मूर्ति और पेटीएम के मालिक विजय शेखर शर्मा जरूर हैं, जिनकी सम्पत्ति 1 अरब अमेरिकी डॉलर से ज्यादा है, लेकिन उनका नंबर भी देश के अरबपतियों में बहुत नीचे हैं। भारत में ज्यादातर ब्राह्मण आर्थिक रूप से निम्न-मध्य वर्ग अथवा उच्च-मध्यम वर्ग से हैं। अलबत्ता ब्राह्मण अपनी बौद्धिक क्षमता से अन्य जातियों को अमीरों और और अमीर बनने में जरूर पूरी क्षमता से मदद करते रहे हैं। खुद धनाढ्य बनने का सपना पालने वाले ब्राह्मण कम हैं और इसमें कामयाब होने वाले तो और भी उंगली पर गिनने लायक हैं।

ऐसे में सवाल यह है कि पीटर नवारो ने अमीरी के ि?लए ब्राह्मणों को ही टारगेट क्यों किया? वो चाहते तो यह भी कह सकते थे कि भारत के बड़े कारोबारी सस्ते रूसी तेल को रिफाइन कर उसे ऊंची कीमत में दूसरों को बेचकर (नवारो के शब्दों में लाण्ड्रोमेट) और अमीर बनते जा रहे हैं। जानकारों का कहना है कि नवारो की यह ब्राह्मण समझ दरअसल उस 'बोस्टन ब्राह्मण' शब्द से आई है। जिसे 19 वीं सदी के चिकित्सक, लेखक ओलीवर वेन्डेल होम्स सीनियर ने ' द अटलांटिक मंथली' पत्रिका में लिखे एक लेख में प्रयुक्त किया था। यह लेख पत्रिका के जनवरी 1860 के अंक में छपा था। 'बोस्टन ब्राह्मण' दरअसल अमेरिका के इस व्यावसायिक शहर में रहने वाले उन 66 अमीर परिवारों के लोग थे, जिन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी व्यापार-व्यवसाय से अकूत धन कमाया। इनमें से कुछ तो जन प्रतिनिधि भी बने। असल में होम्स ने जुमला गढ़ा था- 'ब्राह्मीन कास्ट ऑफ न्यू इंग्लैंड।' ऐसा लगता है कि होम्स को भारत के ब्राह्मणों के बारे में केवल इतनी जानकारी थी कि वह यहां की? जाति व्यवस्था में सर्वोच्च पुजारी जाति है तथा समाज और धर्म को नियंत्रित, संचालित करती है। हालांकि उनकी ज्ञान सम्पन्नता का धन सम्पन्नता से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। यानी भारत में धनाढ्य भी जातीय दृष्टि से कुलीन हो यह जरूरी नहीं है। होम्स ने भारत की पारंपरिक और सामाजिक 'कुलीनता' को धनाढ्यता से क्योंकर जोड़ा, इसका कोई आधार नहीं दिखता। क्योंकि तत्कालीन 19 वीं सदी में भी ब्राह्मण ज्ञान-मान की दृष्टि से भले सम्पन्न रहे हों, लेकिन कुछेक अपवादों को छोड़कर धन की दृष्टि से तब भी विपन्न ही थे। बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि 'दारिद्र्य ही ब्राह्मण का भूषण' है। ब्राह्मण की धन के प्रति लालसा भी अनैतिक है। तप और धर्मचालन करना ही उसका काम है। समाज के दान और भिक्षा पर ही उसका जीवन आश्रित है। उसे इसी में संतोष मानना चाहिए। यही उसकी नियति है। यही कर्तव्य है। सारांश कि आर्थिक सम्पन्नता में ब्राह्मण अपनी तुलना किसी से न करें। यह अपेक्षित भी नहीं है। ज्ञान धन ही उसकी सम्पत्ति है। गौरतलब है कि पुराणों और शास्त्रों में भी ब्राह्मणों का जिक्र अमूमन ' एक गरीब ब्राह्मण था...' के रूप में ही होता है। 'एक अमीर ब्राह्मण था..', ऐसा शायद ही कहीं कहा गया हो। दूसरे शब्दों में कहें तो ब्राह्मण का धनसम्पन्न होना परोक्ष रूप से गाली ही है। 'गरूड पुराण' में उल्लेखित एक कथा में एक ब्राह्मण अपनी दरिद्रता से त्रस्त होकर अपने तप से अर्जित पुण्य का सौदा एक धनवान वेश्या से कर लेता है। मृत्यु के पश्चात वेश्या तो स्वर्ग चली जाती है, ब्राह्मण के हिस्से में घोर नरक आता है। वेश्या को ईमानदारी का डिविडेंड मिल जाता है। ब्राह्मण को नहीं।

जाहिर है नवारो ने अपना कमेंट भारत में ब्राह्मणों की वास्तविक माली हालत के संदर्भ में तो नहीं ही किया होगा। उधर होम्स के जुमले में भी जातीय उच्चता का आर्थिक सम्पन्नता के साथ घालमेल किया गया है। ब्राह्मण शब्द का निहितार्थ जाने बगैर उसे लक्ष्मी पुत्रों पर आरोपित कर दिया गया, जबकि होना यह सरस्वती पुत्रों के साथ था।

भारतीय अर्थ शास्त्री और इतिहासकार संजीव सान्याल के अनुसार नवारो के शब्द साफ बताते हैं कि अमेरिका में भारत के बारे में नैरेटिव कौन कंट्रोल करता है। उन्होंने कहा कि यह सीधे-सीधे 19वीं सदी के औपनिवेशिक तानों से लिया गया है, जैसे जेम्स मिल ने किया था। सान्याल ने कहा कि एडवर्ड सईद की 'ओरिएंटलिज़्म' वाली थ्योरी मिडिल ईस्ट से ज्यादा भारत पर लागू होती है। साफ है कि नवारो और उनके आका ट्रंप पश्चिम की बूटी और चश्मे से पूरब के भारत का इलाज करना चाहते हैं। जोकि असंभव है। और उनकी नीयत भी साफ नहीं है। भारत को झुकाने के लिए अब उन्होंने हमारे देश की उन दरारों में भी टांग फंसानी शुरू कर दी है, जिससे हम खुद सालो से जूझ रहे हैं। वरना 'ब्राह्मण' शब्द का गलत संदर्भ में प्रयोग किया ही नहीं होता। कुलीनता की उनकी और हमारी परिभाषाएं अलग हैं। क्योंकि इस देश में ब्राह्मण, जो कि कुल जनसंख्या का महज 5 फीसदी (उनकी प्रभावशीलता ज्यादा हो सकती है) हैं, पर वर्ण व्यवस्था को जिंदा रखने, स्वयं को जाति पिरामिड के शीर्ष पर स्थापित करने, विशेषाधिकार रखने, सनातन की मशाल जलाए रखने, अन्य जातियों को समान अवसर न देने जैसे आरोप तो लग सकते हैं, लेकिन उन पर कारोबारी अमीर होने का आरोप कुटिलता से प्रेरित है और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की मर्यादा के भी खिलाफ है।

अटक गई मनपसंद पोस्टिंग

राज्य सरकार के एक करीबी माने जाने वाले वरिष्ठ आईएएस अफसर की 'मनपसंद पोस्टिंग' की चाहत पूरी नहीं हो पाई। मेन लाइन से दूर किए गए अफसर ने फिर से एक महत्वपूर्ण विभाग की कमान संभालने के लिए पुरजोर कोशिश की। इसके लिये बकायदा एक

मोहन का मंत्रालय

आशीष चौधरी

फाइल भी चलाई, लेकिन यह फाइल मंत्रालय की चौथी मंजिल पर जाकर अटक गई। इस मामले में 'चौथी मंजिल' यानी मुख्य सचिव का हस्तक्षेप हुआ। उन्होंने सरकार के इस प्रिय अफसर की मनपसंद पोस्टिंग की फाइल को सिरे से खारिज कर दिया। यह घटनाक्रम बताता है कि सरकार में करीबी होना ही काफी नहीं, बल्कि अंतिम निर्णय के लिए कुछ और भी देखना होता है। फिलहाल, इस बड़े अफसर की हसरत धरी की धरी रह गई है और वे अगले दांव की तलाश में हैं।

मीठा होता है सब्र का फल

इस बार गणेश उत्सव में मोदक के साथ-साथ निगम-मंडलों में ताजपोशी की उम्मीद लगाए बैठे भाजपा नेताओं को गणेश जी ने शायद यह संदेश दिया कि 'सब्र का फल मीठा होता है, लेकिन उसके लिए दशहरे तक इंतजार करना पड़ेगा।' जी हां, तीन दर्जन निगम-मंडलों में नेताओं की नियुक्ति का 'मुहूर्त' फिलहाल टल गया है और अब 'शुभ' घड़ी दशहरे के आसपास ही आने की संभावना है। 'वरिष्ठ' नेताओं ने अपनी इच्छाओं की फाइलें तो सरकार को सौंप दी थीं, लेकिन 'नियुक्ति' का मसाला ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। बेचारे नेतागण गणेश जी के सामने हाथ जोड़कर बैठे थे कि कहीं इस बार 'लड्डू' उनके हिस्से में आ जाए, लेकिन अब उन्हें दशहरे में 'रावण' दहन तक इंतजार करना पड़ेगा। हो सकता है, तब तक उनकी उम्मीदों का 'अहंकार' भी दहन हो जाए।

पूर्व मंत्री हुए मुखर, पर .....

लंबे समय से मौन धारण किये एक पूर्व मंत्री इन दिनों बयानों को लेकर फ़िर मुखर हो गए हैं। पूर्व मंत्री की एकाएक मुखरता की वजह क्या है यह तो ज्ञात नहीं है लेकिन सूत्र बताते हैं कि प्रदेश अध्यक्ष की दौड़ में शामिल पूर्व मंत्री की संगठन में पूछ परख हाशिये पर चले गई थी और उनके समर्थक भी धीरे-धीरे उनसे दूर हो रहे थे। लिहाजा उन्होंने अपने तीखे बयानों को फिर से हथियार के रूप में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया ताकि संगठन को संज्ञान रहे। सूत्रों का कहना है कि पूर्व मंत्री ने लव जिहाद पर जमकर कहा लेकिन भोपाल के मछली गैंग को लेकर कुछ नहीं बोले। मछली गैंग को लेकर पूर्व मंत्री क्यों नहीं बोले आखिर उन्होंने किस मंत्री कायदा किया या फिर मंत्री रहते उन्होंने भी इस गैंग को पाला पोशा तो नहीं था ?

किस्मत मेहरबान

केंद्र सरकार ने 16 राज्य प्रशासनिक सेवा अधिकारियों को आईएएस अवार्ड का नोटिफिकेशन जारी कर दिया है, जिसमें 2023 की डीपीसी से आठ और 2024 की डीपीसी से आठ अधिकारियों के नाम शामिल हैं। इस सूची में कुछ ऐसे सीनियर अधिकारियों के नाम भी हैं, जिन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि किस्मत उन पर इतनी मेहरबान होगी। लिस्ट आते ही उनकी दबी हुई 'बातचीत' खुल गई, और सूची में उनका नाम प्रमुखता से रहा। नोटिफिकेशन में 2023 की सूची में ढ्रूस नारायण प्रसाद नामदेव, डॉ. कैलाश बुंदेला, एनबी कुशरे, अनिल कुमार डामोर, संविता जहानिया, सारिका भूरिया, और कमल सोलंकी शामिल हैं, जबकि 2024 की डीपीसी से एसके टागोरे, निशा डामार, राकेश कुशरे, शैली, रोशन सक्सेना, कविता भाटिया, श्रीमती सपना अनुराग जैन, और आशीष कुमार पाठक नाम हैं।

गौ-शालाओं को स्वावलंबी बनाना जरूरी : मुख्यमंत्री

प्रदेश में देसी नस्ल के गौपालन को किया जाए प्रोत्साहित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आत्मनिर्भर गौशाला, प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। गौ-शालाएं गोबर, गौमूत्र आदि अपशिष्ट से धन अर्जित कर संपन्न बन सकती हैं। स्वावलंबी गौशालाएं विकसित करने के लिए दुग्ध उत्पादों सहित गौमूत्र-गोबर आदि से निर्मित सामग्री के विक्रय की व्यवस्था विकसित की जाए। साथ ही गौशालाओं में उपलब्ध स्थान का उपयोग सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन के लिए भी किया जाए। प्रदेश के विभिन्न अंचलों में स्थानीय परिवेश के अनुरूप देसी नस्ल के गौपालन को प्रोत्साहित किया जाए। गौशालाओं के प्रबंधन में धार्मिक संस्थाओं और दानदाताओं को जोड़े। प्रदेश में उपलब्ध पशुधन के अनुपात में पशु चिकित्सकों की संख्या कम है। गौवंश के बेहतर प्रबंधन और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए पशु चिकित्सकों की संख्या में बढ़ोतरी आवश्यक है। इस दिशा में आवश्यक कदम उठाए जाएं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यह निर्देश मध्यप्रदेश गौसंवर्धन बोर्ड की मंत्रालय में सोमवार को हुई बैठक में दिए। पशुपालन एवं डेयरी विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री लखन पटेल, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशा अनुसार प्रदेश में देसी नस्ल के गौपालन को प्रोत्साहित करने के लिए गिर, साहीवाल, मालवी और नागौरी नस्ल के पशुधन को प्रोत्साहित किया जाए। प्रदेश के जनजातीय अंचलों में भी गौपालन गतिविधियों को बढ़ाने के लिए आवश्यक नवाचार किए जाएं। प्रदेश में पशुपालन-कृषि-उद्यानिकी तथा नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में समन्वित रूप से कार्य करने से किसानों की आय में भी वृद्धि होगी और दुग्ध उत्पादन की दिशा में भी प्रदेश, देश के शीर्षस्थ राज्यों में शामिल हो सकेगा।

बैठक में जानकारी दी गई कि गौसंवर्धन बोर्ड द्वारा गौशाला समितियों के बैंक खातों में राज्य स्तर से सीधे राशि अंतरित की जा रही है। बोर्ड द्वारा 937 नवीन गौशालाओं की स्थापना उपरांत पंजीयन किया गया है, जिसमें एक लाख 10 हजार गौवंश को आश्रय प्राप्त है। वर्ष 2024-25 में विदिशा, देवास, आगर-मालवा, ग्वालियर, दमोह, सतना तथा रीवा में बायोगैस सह जैविक खाद निर्माण संयंत्र स्थापित किए गए। नगर निगम ग्वालियर, इंदौर तथा उज्जैन ने वृहद गौशालाओं का संचालन आरंभ किया गया है। भोपाल और जबलपुर में गौशालाओं की स्थापना का कार्य जारी है। बैठक में स्वावलंबी गौशालाओं की स्थापना की नीति की प्रगति पर भी समीक्षा हुई।

मऊगंज में गौसेवक की आवाज पर दौड़ी आई गौमाता, सीएम हुए प्रभावित

मऊगंज में गौसेवक की आवाज पर गौ माता के दौड़कर उसके पास आने का दृश्य देखकर लौटे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गौ संवर्धन बोर्ड की बैठक ली। इस दौरान उन्होंने कहा कि गौ संरक्षण-संवर्धन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमारी सरकार गौशालाओं के स्वावलंबन, गौपालकों के उत्थान और किसानों की आय में निरंतर वृद्धि हेतु निरंतर प्रयासरत है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव कल मऊगंज गए थे जहां रकरा गांव के एक गौपालक की एक आवाज सुनकर खुले मैदान में चारा चरने वाली गायें दौड़ती हुई उसके पास पहुंची थीं। सीएम यादव ने खुद यह नजारा देखा था। इससे सीएम यादव खासे प्रभावित हुए थे और इसको लेकर एक्स पर ट्वीट भी किया था।

एडिशनल डीसीपी सीमा अलावा को भोपाल विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि

इंदौर। एडिशनल डीसीपी मुख्यालय इंदौर सीमा अलावा को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय (भोपाल) के सामाजिक विज्ञान संकाय के महिला अध्ययन विभाग में शोधरत थी, उन्हें उनके शोध कार्य पर वर्ष 2024 की डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच डी) की उपाधि प्रदान की गई।

उनका शोध का विषय 'चैलेंजेस ऑफ पुलिस पर्सनल एट वर्क प्लेस: ए स्टडी फ्रॉम जेंडर पर्सपेक्टिव' (कार्यस्थल पर पुलिस कर्मियों की चुनौतियां या लैंगिक परिप्रेक्ष्य से एक अध्ययन) विषय पर केंद्रित रहा। उनके शोध में पुलिस विभाग में कार्यरत महिला एवं पुरुष कर्मियों को कार्यस्थल पर आने वाली समस्याओं, भेदभाव, मानसिक दबाव, कार्य संतुलन तथा लैंगिक असमानताओं का गहन विश्लेषण किया गया। यह अध्ययन न केवल पुलिस बल की कार्यसंस्कृति को समझने में सहायक है, बल्कि नीति-निर्माताओं को एक अधिक समावेशी और संवेदनशील कार्य वातावरण बनाने की दिशा में मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

शिप्रा में टीआई के बाद एसआई का भी शव मिला

नदी में गिरी थी पुलिसकर्मियों की कार

उज्जैन (नप्र)। एसआई मदनलाल निमामा का शव सोमवार शाम 4.30 बजे मिल गया। कॉन्स्टेबल आरती पाल की तलाश शिप्रा में जारी है। इससे पहले रविवार को टीआई अशोक शर्मा का शव मिला था।

उज्जैन में शनिवार को शिप्रा नदी में कार गिरने से लापता हुए 3 पुलिसकर्मियों में से 2 के शव बरामद कर लिए गए। सोमवार को दिनभर चले रेस्क्यू के बाद नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स ,होमगार्ड और गोताखोरों की टीम ने एसआई मदनलाल निमामा का शव शाम करीब 4.30 बजे बरामद कर लिया। कॉन्स्टेबल आरती पाल अब भी लापता है। इससे पहले रविवार सुबह करीब 8 बजे उन्हेल टीआई अशोक शर्मा का शव घटना स्थल से 4 किलोमीटर दूर बरामद किया गया था।

मीडिया में कल कार नदी में गिरने का वीडियो सामने आया था। कार का बंपर घटना स्थल से करीब 3

किलोमीटर दूर भृतहरि गुफा के सामने घाट के पास मिला है। पुलिस टीम मौके पर है। संभावना जताई जा रही है कि कार भी आसपास हो सकती है।रविवार शाम के बाद अंधेरा होने के चलते रेस्क्यू बंद कर दिया गया था। सोमवार को फिर एनडीआरएफ के 30, होमगार्ड के 20 से ज्यादा और शिप्रा तैराक दल के करीब 22 लोगों की टीम सर्चिंग में जुटे रहे।

एसपी प्रदीप शर्मा ने कहा-तीनों पुलिसकर्मी शनिवार को उज्जैन से चिंतामन के लिए निकले थे। वे एक लड़की के लापता होने के मामले की जांच करने जा रहे थे।

टीआई शर्मा को बड़े बेटे ने दी मुखाग्नि

टीआई अशोक शर्मा का रविवार को उज्जैन में चक्र तीर्थ घाट पर अंतिम संस्कार किया गया। एडीजी उमेश जोगा, एसपी प्रदीप शर्मा सहित अन्य सीनियर अफसर मौजूद रहे। बड़े बेटे दर्श शर्मा ने उन्हें मुखाग्नि दी।

कॉन्स्टेबल आरती चला रही थी कार

एसपी प्रदीप शर्मा के मुताबिक, उन्हेल थाना इलाके से 6 सितंबर को 14 साल की लड़की लापता हो गई थी। इसी मामले की जांच के लिए तीनों पुलिसकर्मी चिंतामन की तरफ जा रहे थे।सफेद कलर की कार कॉन्स्टेबल आरती पाल चला रही थीं। कार आरती की ही थी। 41 साल की आरती की शादी नहीं हुई है। 6 माह पहले ही उनके भाई की मौत हुई है।

भोपाल से एक्सपर्ट्स की टीम बांध पहुंची, जांच जारी थी
कलेक्टर बोले- दिल्ली से भी जानकार बुलाए

जबलपुर के बरगी डैम से पानी का रिसाव

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के बरगी डैम से पानी लीक होने का एक वीडियो सामने आने के बाद जिला प्रशासन और नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण (एनवीडीए) सतर्क हो गया है। कलेक्टर की सूचना के बाद एनवीडीए के अधिकारी बरगी डैम पहुंच गए हैं और निरीक्षण कर रहे हैं। हालांकि अफसर इसे रूटीन निरीक्षण बता रहे हैं। कलेक्टर दीपक सक्सेना ने माना कि डैम से पानी रिस रहा है, लेकिन पैनिक होने की जरूरत नहीं है।

बरगी नर्मदा नदी पर बना पहला डैम है, जो 423.05 मीटर तक भर गया है। ऐसे में डैम के ब्लॉक नंबर 3/10 में सीपेज होने की बात सामने आई है। बताया जा रहा है कि इस ब्लॉक से सामान्य से ज्यादा रफ्तार से पानी रिस रहा है। विभाग के अपर मुख्य सचिव राजेश राजौरा ने मामले की गंभीरता को देखते हुए

अधिकारियों की एक टीम रवाना की है, जो निरीक्षण कर जल्द रिपोर्ट पेश करेगी।

टेक्निकल रीजन क्या है, यह बता पाना मुश्किल- कलेक्टर दीपक सक्सेना का कहना है कि यह सच है कि डैम के एक हिस्से से सीपेज हो रहा है। इसका टेक्निकल रीजन क्या है, यह बता पाना मुश्किल है। उन्होंने बताया कि सूचना मिलते ही शासन को इसकी जानकारी दी गई है।

एक-दूसरे को बचाने में गई तीन मजदूरों की जान

ऑयल टैंक सफाई के लिए उतरे थे, कंपनी ने 6 घंटे छुपाए रखा, मजिस्ट्रियल जांच के आदेश

पीथमपुर (नप्र)। पीथमपुर में रविवार रात प्राइवेट ऑयल कंपनी में एक-दूसरे को बचाने में तीन लोगों की जान चली गई। कंपनी ने करीब छह घंटे तक मामले को छुपाए रखा। पुलिस को बिना सूचना दिए निजी अस्पताल ले गए, जहां से इंदौर के एमवाय अस्पताल रेफर कर दिया। यहां तीनों को मृत घोषित कर दिया। मृतक सुनील (35), दीपक (30) और जगदीश हैं।

कारखाने के आसपास तीन थानों के करीब 100 ज्यादा पुलिसकर्मी तैनात हैं। साथ ही, वज्र वाहन भी तैनात है। कंपनी के सामने वाले रोड को बैरिकेटिंग कर बंद कर दिया गया है।

घटना के बाद सोमवार को फैक्ट्री बंद रही। यहां कोई मजदूर काम करने नहीं पहुंचा। बगदून थाना क्षेत्र स्थित श्री सागर लुब्रिकेंट कंपनी में जांच के लिए हेल्थ एंड सेफ्टी विभाग डायरेक्टर नमिता तिवारी समेत अन्य अधिकारी पहुंचे। कलेक्टर प्रियंक मिश्र ने मामले की मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए हैं। तीनों के शव को पोस्टमॉर्टम के बाद पीथमपुर लाया जाएगा।

मजदूर संगठन ने मुआवजे की मांग की है। घटना के विरोध में मजदूर संगठनों ने कंपनी के गेट पर प्रदर्शन की बात कही है। इसे देखते हुए कंपनी के आसपास पुलिस तैनात की गई है। साथ ही, आंसू गैस छोड़ने वाली गन भी मंगाई गई है।मृतक सुनील, दीपक और जगदीश के शव इंदौर के एमवाय अस्पताल के शव गृह में रखे गए। एक के बाद तीन लोगों का दम घुट गया- हेल्थ एंड सेफ्टी विभाग की डायरेक्टर नमिता तिवारी ने बताया कि कंपनी जले हुए ऑयल को री-साइकिल करने का काम करती है। कंपनी में करीब आठ से 10 लोग काम करते थे। रविवार रात करीब 7 बजे ऑयल के टैंक की सफाई के लिए एक मजदूर उतरा था। वह बेहोश हो गया। कुछ देर तक आवाज नहीं आई, तो दूसरा अंदर गया। वह भी बेहोश हो गया, तो तीसरा मजदूर उन्हें बचाने के लिए उतरा। बारी-बारी से तीनों बेहोश हो गए। उन्हें बचाने के लिए कमर में रस्सी बांधकर चौथा मजदूर टैंक में गया। जब वह भी बेहोश होने लगा, तो बाहर खड़े लोगों ने उसे तुरंत बेहोशी की हालत में खींच लिया।

कलेक्टर ने दिए मजिस्ट्रियल जांच के आदेश

कलेक्टर प्रियंक मिश्र ने बताया कि शासन स्तर पर जो मदद हो सकेगी, वो मजदूर परिवार को की जाएगी। कारखाना प्रबंधन पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए सभी कारखाना प्रबंधकों से बैठक की जाएगी। मामले की मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए हैं। पीथमपुर एसडीएम को जांच सौंपी है।

फैक्ट्री प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप

बागदूंन थाना प्रभारी राजेंद्र सोनी ने बताया कि फैक्ट्री मालिक या प्रबंधन ने करीब 6 घंटे तक मामले को छिपाए रखा। पुलिस को कंपनी प्रबंधन की ओर से सूचना नहीं दी गई। वे स्वयं फैक्ट्री गए, लेकिन वहां कोई नहीं मिला। फिलहाल, कारखाने के बाहर पुलिस बल तैनात किया गया है।